قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

حٰمٓ

पारा - 26

eParah

اٰيَاتُهَا: 35

46 سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ 66

رُكُوْعَاتُهَا: 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ؔ (1)	تَنْزِيْلُ	الْكِتٰبِ	مِنَ اللّٰهِ	الْعَزِيْزِ	الْحَكِيْمِ (2)	مَا
حٰمٓ	नाज़िल करना है	किताब का	अल्लाह की तरफ़ से	जो बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	नहीं

خَلَقْنَا	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَمَا	بَيْنَهُمَآ	اِلَّا	بِالْحَقِّ
पैदा किया हमने	आसमानों	और ज़मीन को	और जो कुछ	दर्मियान है इन दोनों के	मगर	साथ हक़ के

وَاَجَلٍ	مُّسَمًّى ؕ	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	عَمَّآ	اُنْذِرُوْا	مُعْرِضُوْنَ (3)
और वक़्त	मुक़र्रर के	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	उस चीज़ से जो	वो डराए गए	ऐराज़ करने वाले हैं

قُلْ	اَرَءَيْتُمْ	مَّا	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	اَرُوْنِيْ	مَاذَا
कह दीजिए	क्या देखा तुमने	जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाए	अल्लाह के	दिखाओ मुझे	क्या कुछ

خَلَقُوْا	مِنَ الْاَرْضِ	اَمْ	لَهُمْ	شِرْكٌ	فِي السَّمٰوٰتِ ؕ	اِيْتُوْنِيْ
उन्होंने पैदा किया है	ज़मीन से	या	उनके लिए	कोई शिराकत है	आसमानों में	लाओ मेरे पास

بِكِتٰبٍ	مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ	اَوْ	اَثٰرَةٍ	مِّنْ عِلْمٍ	اِنْ	كُنْتُمْ
कोई किताब	इससे पहले की	या	बाक़ी मांदा	इल्म में से	अगर	हो तुम

صٰدِقِيْنَ (4)	وَمَنْ	اَضَلُّ	مِمَّنْ	يَّدْعُوْا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ
सच्चे	और कौन	ज़्यादा गुमराह है	उससे जो	पुकारता है	सिवाए	अल्लाह के

مَنْ	لَّا يَسْتَجِيْبُ	لَهٗٓ	اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ	وَهُمْ	عَنْ دُعَآئِهِمْ
उन्हें जो	नहीं वो जवाब दे सकते	उसे	क़यामत के दिन तक	और वो	उनकी पुकार से

غٰفِلُوْنَ (5)	وَاِذَا	حُشِرَ	النَّاسُ	كَانُوْا	لَهُمْ	اَعْدَآءً
ग़ाफ़िल हैं	और जब	जमा किए जाएंगे	लोग	होंगे वो	उनके लिए	दुश्मन

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّ كَانُوْا	بِعِبَادَتِهِمْ	كٰفِرِيْنَ ⑥	وَ اِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُنَا
और होंगे वो	उनकी इबादत के	इंकारी	और जब	पढ़ी जाती हैं	उन पर	आयात हमारी

بَيِّنٰتٍ	قَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لِلْحَقِّ	لَمَّا	جَآءَهُمْ ۙ	هٰذَا
वाज़ेह	कहा	उन्होंने जिन्होंने	कुफ़्र किया	हक़ के बारे में	जब	वो आ गया उनके पास	ये है

سِحْرٌ	مُّبِيْنٌ ⑦ ؕ	اَمْ	يَقُوْلُوْنَ	افْتَرٰىهُ ؕ	قُلْ	اِنِ	افْتَرَيْتُهٗ
जादू	खुल्लम-खुल्ला	या	वो कहते हैं	उसने गढ़ लिया है उसे	कह दीजिए	अगर	गढ़ लिया है मैंने उसे

فَلَا	تَمْلِكُوْنَ	لِيْ	مِنَ اللّٰهِ	شَيْـًٔا ؕ	هُوَ	اَعْلَمُ	بِمَا
तो नहीं	तुम मालिक हो सकते	मेरे लिए	अल्लाह से	किसी चीज़ के	वो	ज़्यादा जानने वाला है	उसे जो

تُفِيْضُوْنَ	فِيْهِ ؕ	كَفٰى	بِهٖ	شَهِيْدًا	بَيْنِيْ	وَ بَيْنَكُمْ ؕ	وَهُوَ
तुम मशग़ूल होते हो	जिसमें	काफ़ी है	उसका	गवाह होना	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे	और वो ही है

الْغَفُوْرُ	الرَّحِيْمُ ⑧	قُلْ	مَا	كُنْتُ	بِدْعًا	مِّنَ الرُّسُلِ
बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	कह दीजिए	नहीं	हूं मैं	नया/अनोखा	रसूलों में से

وَمَآ	اَدْرِيْ	مَا	يُفْعَلُ	بِيْ	وَلَا	بِكُمْ ؕ	اِنْ	اَتَّبِعُ
और नहीं	मैं जानता	क्या	किया जाएगा	मेरे साथ	और ना	तुम्हारे साथ	नहीं	मैं पैरवी करता

اِلَّا	مَا	يُوْحٰٓى	اِلَيَّ	وَمَآ	اَنَا	اِلَّا	نَذِيْرٌ
मगर	उसकी जो	वही की जाती ही	मेरी तरफ़	और नहीं	मैं	मगर	डराने वाला

مُّبِيْنٌ ⑨	قُلْ	اَرَءَيْتُمْ	اِنْ	كَانَ	مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ	وَ كَفَرْتُمْ
खुल्लम-खुल्ला	कह दीजिए	क्या देखा तुमने	अगर	है वो	अल्लाह की तरफ़ से	और कुफ़्र किया तुमने

بِهٖ	وَشَهِدَ	شَاهِدٌ	مِّنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	عَلٰى مِثْلِهٖ	فَاٰمَنَ
साथ उसके	और गवाही दे चुका	एक गवाह	बनी इस्राईल में से	इस जैसे (कलाम) पर	पस वो ईमान ले आया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 1 10 1

وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَهْدِى	الْقَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿10﴾ ع	وَقَالَ
और तकब्बुर किया तुमने	बेशक	अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो ज़ालिम हैं	और कहा

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَوْ	كَانَ	خَيْرًا	مَّا
उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनसे जो	ईमान लाए	अगर	होता वो	बेहतर	ना

سَبَقُوْنَآ	اِلَيْهِ ؕ	وَاِذْ	لَمْ	يَهْتَدُوْا	بِهٖ	فَسَيَقُوْلُوْنَ
वो सबक़त ले जाते हम पर	तरफ़ उसके	और जबकि	नहीं	उन्होंने हिदायत पाई	साथ इसके	तो ज़रूर वो कहेंगे

هٰذَآ	اِفْكٌ	قَدِيْمٌ ﴿11﴾	وَمِنْ قَبْلِهٖ	كِتٰبُ	مُوْسٰٓى	اِمَامًا
ये	झूठ है	पुराना	और इससे पहले थी	किताब	मूसा की	इमाम/रहनुमा

وَّرَحْمَةً ؕ	وَهٰذَا	كِتٰبٌ	مُّصَدِّقٌ	لِّسَانًا عَرَبِيًّا	لِّيُنْذِرَ
और रहमत	और ये	किताब है	तस्दीक़ करने वाली	अरबी ज़बान में	ताकि वो डराए

الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا ۖ	وَبُشْرٰى	لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿12﴾ ج	اِنَّ	الَّذِيْنَ	قَالُوْا
उन्हें जिन्होंने	ज़ुल्म किया	और ख़ुशख़बरी है	नेकोकारों के लिए	बेशक	वो जिन्होंने	कहा

رَبُّنَا	اللّٰهُ	ثُمَّ	اسْتَقَامُوْا	فَلَا	خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ
रब हमारा	अल्लाह है	फिर	उन्होंने इस्तिक़ामत इख़्तियार की	तो ना	कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो

يَحْزَنُوْنَ ﴿13﴾ ج	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	الْجَنَّةِ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ج	جَزَآءً
वो ग़मगीन होंगे	यही लोग हैं	साथी	जन्नत के	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	बदला है

بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿14﴾	وَوَصَّيْنَا	الْاِنْسَانَ	بِوَالِدَيْهِ	اِحْسٰنًا ؕ
बवजह उसके जो	थे वो	वो अमल करते	और ताकीद की हमने	इंसान को	साथ अपने वालिदैन के	एहसान करने की

حَمَلَتْهُ	اُمُّهٗ	كُرْهًا	وَّوَضَعَتْهُ	كُرْهًا ؕ	وَحَمْلُهٗ	وَفِصٰلُهٗ
उठाया उसे	उसकी मां ने	तकलीफ़ से	और उसने जन्म दिया उसे	तकलीफ़ से	और हमल उसका	और दूध छुड़ाना उसका

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ثَلٰثُوْنَ	شَهْرًا ؕ	حَتّٰٓى	اِذَا	بَلَغَ	اَشُدَّهٗ	وَ بَلَغَ	اَرْبَعِيْنَ
तीस	माह है	यहां तक कि	जब	वो पहुंच गया	अपनी जवानी को	और वो पहुंचा	चालीस

سَنَةً ۙ	قَالَ	رَبِّ	اَوْزِعْنِيْٓ	اَنْ	اَشْكُرَ	نِعْمَتَكَ	الَّتِيْٓ
साल को	उसने कहा	ऐ मेरे रब	तौफ़ीक़ दे मुझे	कि	मैं शुक्र अदा करूं	तेरी नेअमत का	वो जो

اَنْعَمْتَ	عَلَيَّ	وَعَلٰى وَالِدَيَّ	وَ اَنْ	اَعْمَلَ	صَالِحًا	تَرْضٰىهُ	
इनआम की तूने	मुझ पर	और मेरे वालिदैन पर	और ये कि	मैं अमल करूं	नेक	तू राज़ी हो जाए जिस से	

وَ اَصْلِحْ	لِيْ	فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ	اِنِّيْ	تُبْتُ	اِلَيْكَ	وَ اِنِّيْ
और इस्लाह कर दे	मेरे लिए	मेरी औलाद में	बेशक मैं	तौबा की मैंने	तरफ़ तेरे	और बेशक मैं

مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ⑮	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	نَتَقَبَّلُ	عَنْهُمْ	اَحْسَنَ	مَا
मुसलमानों में से हूं	यही वो लोग हैं	जो	हम क़ुबूल कर लेते हैं	उनसे	बेहतरीन	जो

عَمِلُوْا	وَ نَتَجَاوَزُ	عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ	فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ	وَعْدَ
उन्होंने अमल किए	और हम दरगुज़र करते हैं	उनकी बुराईयों से	जन्नत वालों में होंगे	वादा है

الصِّدْقِ	الَّذِيْ	كَانُوْا	يُوْعَدُوْنَ ⑯	وَالَّذِيْ	قَالَ	لِوَالِدَيْهِ
सच्चा	वो जो	थे वो	वो वादा किए जाते	और वो जिसने	कहा	अपने वालिदैन से

اُفٍّ	لَّكُمَآ	اَتَعِدٰنِنِيْٓ	اَنْ	اُخْرَجَ	وَقَدْ	خَلَتِ	الْقُرُوْنُ
उफ़	तुम दोनों के लिए	क्या तुम मुझे धमकी देते हो	कि	मैं निकाला जाऊंगा	हालांकि तहक़ीक़	गुज़र चुकीं	उम्मतें

مِنْ قَبْلِيْ ۚ	وَهُمَا	يَسْتَغِيْثٰنِ	اللّٰهَ	وَيْلَكَ	اٰمِنْ ۖ	اِنَّ
मुझ से पहले	और वो दोनों	वो दोनों फरियाद करते हैं	अल्लाह से	(कहते हैं) तेरा बुरा हो	ईमान ले आ	बेशक

وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقٌّ ۖ	فَيَقُوْلُ	مَا	هٰذَآ	اِلَّآ	اَسَاطِيْرُ
वादा	अल्लाह का	सच्चा है	तो वो कहता है	नहीं	ये	मगर	कहानियां

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاَوَّلِيْنَ ⑰	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	حَقَّ	عَلَيْهِمُ	الْقَوْلُ	فِيْٓ اُمَمٍ
पहलों की	यही वो लोग हैं	जो	हक़ हो गई	उन पर	बात	उम्मतों में

قَدْ	خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِّنَ الْجِنِّ	وَالْاِنْسِ ؕ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا
तहक़ीक़	जो गुज़र चुकीं	उनसे पहले	जिन्नों में से	और इंसानों में से	बेशक वो	थे वो

خٰسِرِيْنَ ⑱	وَلِكُلٍّ	دَرَجٰتٌ	مِّمَّا	عَمِلُوْا ۚ	وَلِيُوَفِّيَهُمْ
ख़सारा पाने वाले	और हर एक के लिए	दर्जे हैं	उसमें से जो	उन्होंने अमल किए	और ताकि वो पूरा पूरा बदला दे उन्हें

اَعْمَالَهُمْ	وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ ⑲	وَيَوْمَ	يُعْرَضُ	الَّذِيْنَ
उनके आमाल का	और वो	वो ज़ुल्म ना किए जाऐंगे	और जिस दिन	पेश किए जाऐंगे	वो जिन्होंने

كَفَرُوْا	عَلَى النَّارِ ؕ	اَذْهَبْتُمْ	طَيِّبٰتِكُمْ	فِيْ حَيَاتِكُمُ	الدُّنْيَا
कुफ़्र किया	आग पर	(कहा जाएगा) ले चुके तुम	अपनी नेअमतें	अपनी ज़िंदगी में	दुनिया की

وَاسْتَمْتَعْتُمْ	بِهَا ۚ	فَالْيَوْمَ	تُجْزَوْنَ	عَذَابَ	الْهُوْنِ	بِمَا
और फ़ायदा उठा लिया तुमने	उनका	तो आज	तुम बदला दिए जाओगे	अज़ाब	रुस्वाई का	बवजह उसके जो

كُنْتُمْ	تَسْتَكْبِرُوْنَ	فِي الْاَرْضِ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ	وَبِمَا	كُنْتُمْ
थे तुम	तुम तकब्बुर करते	ज़मीन में	बग़ैर	हक़ के	और बवजह उसके जो	थे तुम

ع 2 10 2

تَفْسُقُوْنَ ⑳ ع	وَاذْكُرْ	اَخَا	عَادٍ ؕ	اِذْ	اَنْذَرَ	قَوْمَهٗ
तुम नाफ़रमानी करते	और ज़िक्र कीजिए	भाई का	आद के	जब	उसने डराया	अपनी क़ौम को

بِالْاَحْقَافِ	وَقَدْ	خَلَتِ	النُّذُرُ	مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ	وَمِنْ خَلْفِهٖٓ
अहक़ाफ़ में	और तहक़ीक़	गुज़र चुके	कई डराने वाले	इससे पहले	और इसके बाद

اَلَّا	تَعْبُدُوْٓا	اِلَّا	اللّٰهَ ؕ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	عَلَيْكُمْ	عَذَابَ
कि ना	तुम इबादत करो	मगर	अल्लाह की	बेशक मैं	मैं डरता हूं	तुम पर	अज़ाब से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿21﴾	قَالُوْٓا	اَجِئْتَنَا	لِتَاْفِكَنَا	عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ
एक बड़े दिन के	उन्होंने कहा	क्या आया है तू हमारे पास	ताकि तू फेर दे हमें	हमारे इलाहों से

فَاْتِنَا	بِمَا	تَعِدُنَآ	اِنْ	كُنْتَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿22﴾	قَالَ
पस ले आ हमारे पास	जिसकी	तू धमकी देता है हमें	अगर	है तू	सच्चों में से	उसने कहा

اِنَّمَا	الْعِلْمُ	عِنْدَ	اللّٰهِ ۖ	وَاُبَلِّغُكُمْ	مَّآ	اُرْسِلْتُ
बेशक	इल्म	पास है	अल्लाह के	और मैं पहुंचाता हूं तुम्हें	वो जो	भेजा गया मैं

بِهٖ	وَلٰكِنِّيْٓ	اَرٰىكُمْ	قَوْمًا	تَجْهَلُوْنَ ﴿23﴾	فَلَمَّا	رَاَوْهُ
साथ इसके	और लेकिन मैं	मैं देखता हूं तुम्हें	ऐसे लोग	तुम जहालत बरत्ते हो	तो जब	उन्होंने देखा उसे

عَارِضًا	مُّسْتَقْبِلَ	اَوْدِيَتِهِمْ ۙ	قَالُوْا	هٰذَا	عَارِضٌ	مُّمْطِرُنَا ؕ
एक बादल	सामने आने वाला	उनकी वादियों के	उन्होंने कहा	ये	बादल	मींह बरसाने वाला है हम पर

بَلْ	هُوَ	مَا	اسْتَعْجَلْتُمْ	بِهٖ ؕ	رِيْحٌ	فِيْهَا	عَذَابٌ
बल्कि	ये वो है	जो	जल्दी मचा रहे थे तुम	इसकी	हवा है	जिसमें	अज़ाब है

اَلِيْمٌ ۙ ﴿24﴾	تُدَمِّرُ	كُلَّ	شَيْءٍ	بِاَمْرِ	رَبِّهَا	فَاَصْبَحُوْا
दर्दनाक	वो तबाह कर देगी	हर	चीज़ को	हुक्म से	अपने रब के	फिर वो हो गए

لَا يُرٰٓى	اِلَّا	مَسٰكِنُهُمْ ؕ	كَذٰلِكَ	نَجْزِى	الْقَوْمَ
कि ना दिखाई देता था (कुछ भी)	सिवाए	उनके घरों के	इसी तरह	हम बदला दिया करते हैं	उन लोगों को

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿25﴾	وَلَقَدْ	مَكَّنّٰهُمْ	فِيْمَآ	اِنْ	فِيْهِ
जो मुजरिम हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	क़ुदरत दी हमने उन्हें	उसमें जो	नहीं	उसमें

وَجَعَلْنَا	لَهُمْ	سَمْعًا	وَّاَبْصَارًا	وَّاَفْـِٕدَةً ۖ	فَمَآ	اَغْنٰى
और बनाए हमने	उनके लिए	कान	और आंखें	और दिल	तो ना	काम आए

عَنْهُمْ
उन्हें

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَمْعُهُمْ	وَلَآ	اَبْصَارُهُمْ	وَلَآ	اَفْـِٕدَتُهُمْ	مِّنْ شَيْءٍ	اِذْ
कान उनके	और ना	आंखें उनकी	और ना	दिल उनके	कुछ भी	जब

كَانُوْا	يَجْحَدُوْنَ ۙ	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ	وَحَاقَ	بِهِمْ	مَّا	كَانُوْا
थे वो	वो इंकार करते	आयात का	अल्लाह की	और घेर लिया	उन्हें	उसने जो	थे वो

ع 3 6 3

بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿26﴾ ع	وَلَقَدْ	اَهْلَكْنَا	مَا	حَوْلَكُمْ	مِّنَ الْقُرٰى
उसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	और अलबत्ता तहक़ीक़	हलाक कर दिया हमने	जो	तुम्हारे इर्द-गिर्द है	बस्तियों में से

وَصَرَّفْنَا	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿27﴾	فَلَوْلَا	نَصَرَهُمُ
और फेर-फेर कर लाए हम	आयात को	ताकि वो	वो लौट आऐं	तो क्यों ना	मदद की उनकी

الَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	قُرْبَانًا	اٰلِهَةً ؕ	بَلْ	ضَلُّوْا
उन्होंने जिनको	उन्होंने बनाया	सिवाए	अल्लाह के	तक़र्रुब के लिए	कुछ इलाह	बल्कि	वो गुम हो गए

عَنْهُمْ ۚ	وَذٰلِكَ	اِفْكُهُمْ	وَمَا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ ﴿28﴾	وَاِذْ
उनसे	और ये	झूठ था उनका	और जो	थे वो	वो गढ़ा करते	और जब

صَرَفْنَآ	اِلَيْكَ	نَفَرًا	مِّنَ الْجِنِّ	يَسْتَمِعُوْنَ	الْقُرْاٰنَ ۚ	فَلَمَّا
फेर लाए हम	तरफ़ आपके	एक गिरोह	जिन्नों में से	जो ग़ौर से सुन रहे थे	क़ुरआन	फिर जब

حَضَرُوْهُ	قَالُوْٓا	اَنْصِتُوْا ۚ	فَلَمَّا	قُضِيَ	وَلَّوْا	اِلٰى قَوْمِهِمْ
वो हाज़िर हुए उसके पास	वो कहने लगे	चुप हो जाओ	तो जब	वो पूरा कर दिया गया	वो वापस लौटे	तरफ़ अपनी क़ौम के

مُّنْذِرِيْنَ ﴿29﴾	قَالُوْا	يٰقَوْمَنَآ	اِنَّا	سَمِعْنَا	كِتٰبًا	اُنْزِلَ
डराने वाले बन कर	उन्होंने कहा	ऐ हमारी क़ौम	बेशक हम	सुना हमने	एक किताब को	जो नाज़िल की गई

مِنْۢ بَعْدِ	مُوْسٰى	مُصَدِّقًا	لِّمَا	بَيْنَ يَدَيْهِ	يَهْدِيْٓ
बाद	मूसा के	तस्दीक़ करने वाली है	उसकी जो	इससे पहले है	वो रहनुमाई करती है

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَى الْحَقِّ	وَ اِلٰى طَرِيْقٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿30﴾	يٰقَوْمَنَآ	اَجِيْبُوْا	دَاعِيَ اللّٰهِ
तरफ़ हक़ के	और तरफ़ रास्ते	सीधे के	ऐ हमारी क़ौम	जवाब दो	अल्लाह के दाई को

وَ اٰمِنُوْا	بِهٖ	يَغْفِرْ	لَكُمْ	مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ	وَ يُجِرْكُمْ
और ईमान ले आओ	उस पर	वो बख़्श देगा	तुम्हारे लिए	तुम्हारे गुनाहों को	और वो पनाह देगा तुम्हें

مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿31﴾	وَ مَنْ	لَّا يُجِبْ	دَاعِيَ اللّٰهِ	فَلَيْسَ
दर्दनाक अज़ाब से	और जो	ना जवाब दे	अल्लाह के दाई को	तो नहीं है वो

بِمُعْجِزٍ	فِي الْاَرْضِ	وَ لَيْسَ	لَهٗ	مِنْ دُوْنِهٖٓ	اَوْلِيَآءُ ؕ	اُولٰٓئِكَ
आजिज़ करने वाला	ज़मीन में	और नहीं	उसके लिए	उसके सिवा	कोई मददगार	यही लोग हैं

فِيْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ﴿32﴾	اَوَ لَمْ	يَرَوْا	اَنَّ	اللّٰهَ	الَّذِيْ	خَلَقَ
गुमराही में	खुली	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक	अल्लाह	वो है जिसने	पैदा किया

السَّمٰوٰتِ	وَ الْاَرْضَ	وَ لَمْ	يَعْيَ	بِخَلْقِهِنَّ	بِقٰدِرٍ	عَلٰٓى	اَنْ
आसमानों	और ज़मीन को	और नहीं	वो थका	उनको पैदा करने से	क़ादिर है	उस पर	कि

يُّحْيِۦَ	الْمَوْتٰى ؕ	بَلٰٓى	اِنَّهٗ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿33﴾
वो ज़िंदा कर दे	मुर्दों को	क्यों नहीं	बेशक वो	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है

وَ يَوْمَ	يُعْرَضُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	عَلَى النَّارِ ؕ	اَلَيْسَ	هٰذَا
और जिस दिन	पेश किए जाऐंगे	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	आग पर	क्या नहीं है	ये

بِالْحَقِّ ؕ	قَالُوْا	بَلٰى	وَ رَبِّنَا ؕ	قَالَ	فَذُوْقُوا	الْعَذَابَ
हक़	वो कहेंगे	क्यों नहीं	क़सम है हमारे रब की	वो फ़रमाएगा	पस चखो	अज़ाब

بِمَا	كُنْتُمْ	تَكْفُرُوْنَ ﴿34﴾	فَاصْبِرْ	كَمَا	صَبَرَ	اُولُوا الْعَزْمِ
बवजह उसके जो	थे तुम	तुम कुफ़्र करते	पस सब्र कीजिए	जैसा कि	सब्र किया	ऊलुल अज़्म/हिम्मत वालों ने

مِنَ الرُّسُلِ	وَلَا	تَسْتَعْجِلْ	لَّهُمْ ؕ	كَاَنَّهُمْ	يَوْمَ	يَرَوْنَ
रसूलों में से	और ना	आप जल्दी तलब कीजिए	उनके लिए	गोया कि वो	जिस दिन	वो देखेंगे

مَا	يُوْعَدُوْنَ ۙ	لَمْ	يَلْبَثُوْٓا	اِلَّا	سَاعَةً	مِّنْ نَّهَارٍ ؕ
जो	वो वादा किए जाते हैं	नहीं	वो ठहरे	मगर	एक घड़ी	दिन की

ع 4 9 4

بَلٰغٌ ۚ	فَهَلْ	يُهْلَكُ	اِلَّا	الْقَوْمُ	الْفٰسِقُوْنَ (35) ع
पहुंचा देना है	तो नहीं	हलाक किया जाएगा	मगर	उन लोगों को	जो फ़ासिक़ है

اٰيَاتُهَا : 38 — 47 سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ 95 — رُكُوْعَاتُهَا : 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَصَدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	اَضَلَّ
वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	और उन्होंने रोका	अल्लाह के रास्ते से	उसने ज़ाया कर दिए

اَعْمَالَهُمْ (1)	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	وَاٰمَنُوْا	بِمَا
आमाल उनके	और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	और वो ईमान लाए	उस पर जो

نُزِّلَ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	وَّهُوَ	الْحَقُّ	مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ	كَفَّرَ	عَنْهُمْ
नाज़िल किया गया	मोहम्मद पर	और वो ही	हक़ है	उनके रब की तरफ़ से	उसने दूर कर दीं	उनसे

سَيِّاٰتِهِمْ	وَاَصْلَحَ	بَالَهُمْ (2)	ذٰلِكَ	بِاَنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوا
बुराईयां उनकी	और उसने दुरुस्त कर दिया	हाल उनका	ये	बवजह उसके	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

اتَّبَعُوا	الْبَاطِلَ	وَاَنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اتَّبَعُوا	الْحَقَّ
उन्होंने पैरवी की	बातिल की	और ये कि	वो लोग जो	ईमान लाए	उन्होंने पैरवी की	हक़ की

مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ	كَذٰلِكَ	يَضْرِبُ	اللّٰهُ	لِلنَّاسِ	اَمْثَالَهُمْ (3)	فَاِذَا
अपने रब की तरफ़ से	इसी तरह	बयान करता है	अल्लाह	लोगों के लिए	मिसालें उनकी	फिर जब

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِذَآ	حَتّٰٓى	الرِّقَابِ ؕ	فَضَرْبَ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	لَقِيْتُمُ
जब	यहां तक कि	गर्दनों का	तो मारना है	कुफ़्र किया	उनसे जिन्होंने	मिलो तुम

وَاِمَّا	بَعْدُ	مَنًّۢا	فَاِمَّا	الْوَثَاقَ ۙ	فَشُدُّوا	اَثْخَنْتُمُوْهُمْ
और ख़्वाह	इसके बाद	एहसान करो	फिर ख़्वाह	बंधन	फिर मज़बूत बांधो	ख़ूब ख़ून रेज़ी कर चुको तुम उनकी

يَشَآءُ	وَلَوْ	ذٰلِكَ ؕۛ	اَوْزَارَهَا ۚۛ ⑤	الْحَرْبُ	تَضَعَ	حَتّٰى	فِدَآءً
चाहता	और अगर	ये है (हुक्म)	हथियार अपने	जंग	रख दे	यहां तक कि	फ़िदया लो

بِبَعْضٍ ؕ	بَعْضَكُمْ	لِّيَبْلُوَا۟	وَلٰكِنْ	مِنْهُمْ	لَانْتَصَرَ	اللّٰهُ
साथ बाज़ के	तुम्हारे बाज़ को	ताकि वो आज़माए	और लेकिन	उनसे	अलबत्ता वो बदला ले लेता	अल्लाह

اَعْمَالَهُمْ ④	يُّضِلَّ	فَلَنْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	قُتِلُوْا	وَالَّذِيْنَ
आमाल उनके	वो ज़ाया करेगा	तो हरगिज़ ना	अल्लाह के रास्ते में	मारे गए	और वो लोग जो

الْجَنَّةَ	وَيُدْخِلُهُمُ	بَالَهُمْ ۚ ⑤	وَيُصْلِحُ	سَيَهْدِيْهِمْ
उस जन्नत में	और वो दाख़िल करेगा उन्हें	हाल उनके	और वो दुरुस्त कर देगा	ज़रूर वो रहनुमाई करेगा उनकी

تَنْصُرُوا	اِنْ	اٰمَنُوْٓا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	لَهُمْ ⑥	عَرَّفَهَا
तुम मदद करोगे	अगर	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	उनको	उसने पहचान करा दी जिसकी

فَتَعْسًا	كَفَرُوْا	وَالَّذِيْنَ	اَقْدَامَكُمْ ⑦	وَيُثَبِّتْ	يَنْصُرْكُمْ	اللّٰهَ
पस तबाही है	कुफ़्र किया	और वो लोग जिन्होंने	तुम्हारे क़दमों को	और वो जमा देगा	वो मदद करेगा तुम्हारी	अल्लाह की

مَآ	كَرِهُوْا	بِاَنَّهُمْ	ذٰلِكَ	اَعْمَالَهُمْ ⑧	وَاَضَلَّ	لَّهُمْ
जो	उन्होंने नापसंद किया	बवजह उसके कि वो	ये	आमाल उनके	और उसने ज़ाया कर दिए	उनके लिए

فِي الْاَرْضِ	يَسِيْرُوْا	اَفَلَمْ	اَعْمَالَهُمْ ⑨	فَاَحْبَطَ	اللّٰهُ	اَنْزَلَ
ज़मीन में	वो चले फिरे	क्या फिर नहीं	आमाल उनके	तो उसने बर्बाद कर दिए	अल्लाह ने	नाज़िल किया

وقد يبتدا بقوله ذٰلِكَ و لكن حسن اتصاله بما قبله و يوقف على ذٰلِكَ 12

معٰ 13

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	دَمَّرَ
तो वो देखते	किस तरह	हुआ	अंजाम	उन लोगों का जो	उनसे पहले थे	हलाकत डाली

اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ ۫	وَلِلْكٰفِرِيْنَ	اَمْثَالُهَا ⑩	ذٰلِكَ	بِاَنَّ	اللّٰهَ
अल्लाह ने	उन पर	और काफ़िरों के लिए	इस जैसी (सज़ाऐं) हैं	ये	बवजह इसके कि	अल्लाह

ع 1 11 5

مَوْلَى	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَاَنَّ	الْكٰفِرِيْنَ	لَا مَوْلٰى	لَهُمْ ⑪ ع
मददगार है	उन लोगों का जो	ईमान लाए	और बेशक	काफ़िर	नहीं कोई मददगार	उनका

اِنَّ	اللّٰهَ	يُدْخِلُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ
बेशक	अल्लाह	वो दाख़िल करेगा	उन लोगों को जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ؕ	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	يَتَمَتَّعُوْنَ
बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो फ़ायदा उठाते हैं

وَيَاْكُلُوْنَ	كَمَا	تَاْكُلُ	الْاَنْعَامُ	وَالنَّارُ	مَثْوًى	لَّهُمْ ⑫
और वो खाते हैं	जैसा कि	खाते हैं	जानवर	और आग	ठिकाना है	उनका

وَكَاَيِّنْ	مِّنْ قَرْيَةٍ	هِيَ	اَشَدُّ	قُوَّةً	مِّنْ قَرْيَتِكَ	الَّتِيْٓ
और कितनी ही	बस्तियां	वो	ज़्यादा शदीद थीं	क़ुव्वत में	आपकी बस्ती से	वो जिसने

اَخْرَجَتْكَ ۚ	اَهْلَكْنٰهُمْ	فَلَا	نَاصِرَ	لَهُمْ ⑬	اَفَمَنْ	كَانَ
निकाल दिया आपको	हलाक किया हमने उन्हें	पस ना था	कोई मदद करने वाला	उनके लिए	क्या भला जो	हो

عَلٰى بَيِّنَةٍ	مِّنْ رَّبِّهٖ	كَمَنْ	زُيِّنَ	لَهٗ	سُوْٓءُ	عَمَلِهٖ
ऊपर एक वाज़ेह दलील के	अपने रब की तरफ़ से	मानिंद उसके हो सकता है जो	मुज़य्यन कर दिए गए हों	उसके लिए	बुरे	अमल उसके

وَاتَّبَعُوْٓا	اَهْوَآءَهُمْ ⑭	مَثَلُ	الْجَنَّةِ	الَّتِيْ	وُعِدَ	الْمُتَّقُوْنَ ؕ
और उन्होंने पैरवी की	अपनी ख़्वाहिशात की	मिसाल	उस जन्नत की	वो जो	वादा किए गए	मुत्तक़ी लोग

فِيهَآ	اَنْهٰرٌ	مِّنْ مَّآءٍ	غَيْرِ	اٰسِنٍ ۚ	وَاَنْهٰرٌ	مِّنْ لَّبَنٍ	لَّمْ
उसमें	नहरें हैं	पानी की	ना	बदलने वाले	और नहरें हैं	दूध की	ना

يَتَغَيَّرْ	طَعْمُهٗ ۚ	وَاَنْهٰرٌ	مِّنْ خَمْرٍ	لَّذَّةٍ	لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ ۝٥	وَاَنْهٰرٌ
तब्दील होगा	मज़ा जिसका	और नहरें हैं	शराब की	बाइसे लज़्ज़त हैं	पीने वालों के लिए	और नहरें हैं

مِّنْ عَسَلٍ	مُّصَفًّى ؕ	وَلَهُمْ	فِيهَا	مِنْ كُلِّ	الثَّمَرٰتِ	وَمَغْفِرَةٌ
शहद की	ख़ूब साफ़ किया हुआ	और उनके लिए हैं	उसमें	हर क़िस्म के	फल	और बख़्शिश

مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ	كَمَنْ	هُوَ	خَالِدٌ	فِي النَّارِ	وَسُقُوْا
उनके रब की तरफ़ से	मानिंद उसके हो सकता है जो	वो	हमेशा रहने वाला है	आग में	और वो पिलाए जाऐंगे

مَآءً	حَمِيْمًا	فَقَطَّعَ	اَمْعَآءَهُمْ ⑮	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّسْتَمِعُ
पानी	खौलता हुआ	तो वो काट देगा	आंतें उनकी	और उनमें से कुछ वो हैं	जो	ग़ौर से सुनते हैं

اِلَيْكَ ۚ	حَتّٰٓى	اِذَا	خَرَجُوْا	مِنْ عِنْدِكَ	قَالُوْا	لِلَّذِيْنَ
आपको	यहां तक कि	जब	वो निकलते हैं	आपके पास से	वो कहते हैं	उन लोगों से जो

اُوْتُوا	الْعِلْمَ	مَاذَا	قَالَ	اٰنِفًا ۟	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	طَبَعَ
दिए गए	इल्म	क्या कुछ	उसने कहा था	अभी	यही वो लोग हैं	जो	मोहर लगा दी

اللّٰهُ	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	وَاتَّبَعُوْٓا	اَهْوَآءَهُمْ ⑯	وَالَّذِيْنَ	اهْتَدَوْا
अल्लाह ने	उनके दिलों पर	और उन्होंने पैरवी की	अपनी ख़्वाहिशात की	और वो जिन्होंने	हिदायत पाई

زَادَهُمْ	هُدًى	وَّاٰتٰىهُمْ	تَقْوٰىهُمْ ⑰	فَهَلْ	يَنْظُرُوْنَ	اِلَّا
उसने ज़्यादा किया उन्हें	हिदायत में	और उसने दिया उन्हें	तक़वा उनका	तो नहीं	वो इन्तिज़ार करते	मगर

السَّاعَةَ	اَنْ	تَاْتِيَهُمْ	بَغْتَةً ۚ	فَقَدْ	جَآءَ	اَشْرَاطُهَا ۚ
क़यामत का	कि	वो आ जाए उनके पास	अचानक	तो तहक़ीक़	आ चुकीं	अलामात उसकी

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاَنّٰى	لَهُمْ	اِذَا	جَآءَتْهُمْ	ذِكْرٰىهُمْ ﴿18﴾	فَاعْلَمْ	اَنَّهٗ
तो कहां से होगी	उनके लिए	जब	आ जाएगी उनके पास	नसीहत उनकी	तो जान लीजिए	बेशक वो

لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	اللّٰهُ	وَاسْتَغْفِرْ	لِذَنْۢبِكَ	وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ
नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	अल्लाह	और बख़्शिश मांगिए	अपने क़ुसूर के लिए	और मोमिन मर्दों के लिए

ع 2 8 6

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	مُتَقَلَّبَكُمْ	وَمَثْوٰىكُمْ ﴿19﴾ ع	وَيَقُوْلُ
और मोमिन औरतों के लिए	और अल्लाह	वो जानता है	चलना फिरना तुम्हारा	और ठिकाना तुम्हारा	और कहते हैं

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَوْلَا	نُزِّلَتْ	سُوْرَةٌ ۚ	فَاِذَآ	اُنْزِلَتْ	سُوْرَةٌ
वो लोग जो	ईमान लाए	क्यों नहीं	नाज़िल की गई	कोई सूरत	फिर जब	नाज़िल की जाती है	कोई सूरत

مُّحْكَمَةٌ	وَّذُكِرَ	فِيْهَا	الْقِتَالُ ۙ	رَاَيْتَ	الَّذِيْنَ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ
मोहकम	और ज़िक्र किया जाता है	उसमें	जंग का	आप देखेंगे	उन लोगों को	जिनके दिलों में

مَّرَضٌ	يَّنْظُرُوْنَ	اِلَيْكَ	نَظَرَ	الْمَغْشِيِّ	عَلَيْهِ	مِنَ الْمَوْتِ ؕ
बीमारी है	वो देख रहे होंगे	आपकी तरफ़	(जैसे) देखना	उसका ग़शी तारी हो गई हो	जिस पर	मौत की वजह से

فَاَوْلٰى	لَهُمْ ﴿20﴾ ج	طَاعَةٌ	وَّقَوْلٌ	مَّعْرُوْفٌ ق	فَاِذَا	عَزَمَ
तो तबाही/हलाकत है	उनके लिए	इताअत करना	और बात कहना	भली (बेहतर है)	फिर जब	पुख़्ता हो जाए

الْاَمْرُ ق	فَلَوْ	صَدَقُوا	اللّٰهَ	لَكَانَ	خَيْرًا	لَّهُمْ ﴿21﴾ ج	فَهَلْ
हुक्म (जंग का)	फिर अगर	वो सच्चे रहें	अल्लाह से	अलबत्ता होगा	बेहतर	उनके लिए	तो क्या

عَسَيْتُمْ	اِنْ	تَوَلَّيْتُمْ	اَنْ	تُفْسِدُوْا	فِي الْاَرْضِ	وَتُقَطِّعُوْٓا
उम्मीद है तुमसे	कि अगर	हाकिम बन जाओ तुम	ये कि	तुम फ़साद करो	ज़मीन में	और तुम काटो

اَرْحَامَكُمْ ﴿22﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	لَعَنَهُمُ	اللّٰهُ	فَاَصَمَّهُمْ	وَاَعْمٰٓى
अपने रिश्तों को	यही वो लोग हैं	जो	लाअनत की उन पर	अल्लाह ने	फिर उसने बहरा कर दिया उन्हें	और उसने अंधा कर दिया

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَبۡصَارَهُمۡ ﴿23﴾	اَفَلَا	يَتَدَبَّرُوۡنَ	الۡقُرۡاٰنَ	اَمۡ	عَلٰى قُلُوۡبٍ
उनकी आंखों को	क्या भला नहीं	वो ग़ौरो फ़िक्र करते	क़ुरआन में	या	दिलों पर

اَقۡفَالُهَا ﴿24﴾	اِنَّ	الَّذِيۡنَ	ارۡتَدُّوۡا	عَلٰٓى اَدۡبَارِهِمۡ	مِّنۡۢ بَعۡدِ	مَا
उनके ताले हैं	बेशक	वो लोग जो	फिर गए	अपनी पुश्तों पर	बाद इसके	जो

تَبَيَّنَ	لَهُمُ	الۡهُدَى ۙ	الشَّيۡطٰنُ	سَوَّلَ	لَهُمۡ ؕ	وَ اَمۡلٰى
वाज़ेह हो गई	उनके लिए	हिदायत	शैतान ने	आरास्ता कर दिया	उनके लिए	और (अल्लाह ने) ढील दी

لَهُمۡ ﴿25﴾	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمۡ	قَالُوۡا	لِلَّذِيۡنَ	كَرِهُوۡا	مَا	نَزَّلَ
उन्हें	ये	बवजह उसके कि वो	वो कहते है	उनको जिन्होंने	नापसंद किया	उस चीज़ को जो	नाज़िल की

اللّٰهُ	سَنُطِيۡعُكُمۡ	فِىۡ بَعۡضِ الۡاَمۡرِ ۚ	وَاللّٰهُ	يَعۡلَمُ
अल्लाह ने	अनक़रीब हम इताअत करेंगे तुम्हारी	बाज़ कामों में	और अल्लाह	वो जानता है

اِسۡرَارَهُمۡ ﴿26﴾	فَكَيۡفَ	اِذَا	تَوَفَّتۡهُمُ	الۡمَلٰٓئِكَةُ	يَضۡرِبُوۡنَ
राज़ उनके	तो क्या होगा	जब	फ़ौत करेंगे उन्हें	फ़रिश्ते	वो मारेंगे

وُجُوۡهَهُمۡ	وَ اَدۡبَارَهُمۡ ﴿27﴾	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمُ	اتَّبَعُوۡا	مَآ
उनके चेहरों को	और उनकी पीठों को	ये	बवजह उसके कि वो	उन्होंने पैरवी की	उसकी जिसने

اَسۡخَطَ	اللّٰهَ	وَ كَرِهُوۡا	رِضۡوَانَهٗ	فَاَحۡبَطَ	اَعۡمَالَهُمۡ ﴿28﴾ ع	اَمۡ
ग़ुस्सा दिलाया	अल्लाह को	और उन्होंने नापसंद किया	उसकी रज़ा को	तो उसने ज़ाया कर दिए	आमाल उनके	या

ع 3 9 7

حَسِبَ	الَّذِيۡنَ	فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ	مَّرَضٌ	اَنۡ	لَّنۡ	يُّخۡرِجَ	اللّٰهُ
समझा है	उन लोगों ने	जिनके दिलों में	बीमारी है	कि	हरगिज़ नहीं	निकालेगा	अल्लाह

اَضۡغَانَهُمۡ ﴿29﴾	وَ لَوۡ	نَشَآءُ	لَاَرَيۡنٰكَهُمۡ	فَلَعَرَفۡتَهُمۡ	بِسِيۡمٰهُمۡ ؕ
कीने उनके	और अगर	हम चाहें	अलबत्ता दिखा दें हम आपको उन्हें	फिर अलबत्ता पहचान लेंगे आप उन्हें	उनके चेहरों से

INTERNATIONAL HUDA WELFARE FOUNDATION

وَلَتَعۡرِفَنَّهُمۡ	فِيۡ لَحۡنِ	الۡقَوۡلِؕ	وَاللّٰهُ	يَعۡلَمُ	اَعۡمَالَكُمۡ (30)
और अलबत्ता आप ज़रूर पहचान लेंगे उन्हें	अंदाज़/उस्लूब से	गुफ़्तगू के	और अल्लाह	वो जानता है	आमाल तुम्हारे

وَلَنَبۡلُوَنَّكُمۡ	حَتّٰى	نَعۡلَمَ	الۡمُجٰهِدِيۡنَ	مِنۡكُمۡ	وَالصّٰبِرِيۡنَ ۙ
और अलबत्ता हम ज़रूर आज़माऐंगे तुम्हें	यहां तक कि	हम जान लें	मुजाहिदों को	तुम में से	और सब्र करने वालों को

وَنَبۡلُوَا۟	اَخۡبَارَكُمۡ (31)	اِنَّ	الَّذِيۡنَ	كَفَرُوۡا	وَصَدُّوۡا
और हम आज़माऐंगे	तुम्हारे हालात को	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	और उन्होंने रोका

عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ	وَشَآقُّوا	الرَّسُوۡلَ	مِنۡۢ بَعۡدِ	مَا	تَبَيَّنَ	لَهُمُ
अल्लाह के रास्ते से	और उन्होंने मुख़ालिफ़त की	रसूल की	इसके बाद	कि	वाज़ेह हो चुकी	उनके लिए

الۡهُدٰى ۙ	لَنۡ	يَّضُرُّوا	اللّٰهَ	شَيۡـًٔا ؕ	وَسَيُحۡبِطُ	اَعۡمَالَهُمۡ (32)
हिदायत	हरगिज़ नहीं	वो नुक़्सान पहुंचा सकते	अल्लाह को	कुछ भी	और अनक़रीब वो ज़ाया कर देगा	आमाल उनके

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ	اٰمَنُوۡۤا	اَطِيۡعُوا	اللّٰهَ	وَاَطِيۡعُوا	الرَّسُوۡلَ	وَلَا	تُبۡطِلُوۡۤا
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	इताअत करो	अल्लाह की	और इताअत करो	रसूल की	और ना	तुम बातिल करो

اَعۡمَالَكُمۡ (33)	اِنَّ	الَّذِيۡنَ	كَفَرُوۡا	وَصَدُّوۡا	عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ
आमाल अपने	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	और उन्होंने रोका	अल्लाह के रास्ते से

ثُمَّ	مَاتُوۡا	وَهُمۡ	كُفَّارٌ	فَلَنۡ	يَّغۡفِرَ	اللّٰهُ	لَهُمۡ (34)
फिर	वो मर गए	इस हाल में कि वो	काफ़िर थे	तो हरगिज़ नहीं	माफ़ करेगा	अल्लाह	उन्हें

فَلَا	تَهِنُوۡا	وَتَدۡعُوۡۤا	اِلَى السَّلۡمِ ۖۗ	وَاَنۡتُمُ	الۡاَعۡلَوۡنَ ۖۗ	وَاللّٰهُ
पस ना	तुम सुस्ती करो	और (ना) तुम बुलाओ	तरफ़ सुलह के	और तुम ही	ग़ालिब रहने वाले हो	और अल्लाह

مَعَكُمۡ	وَلَنۡ	يَّتِرَكُمۡ	اَعۡمَالَكُمۡ (35)	اِنَّمَا	الۡحَيٰوةُ	الدُّنۡيَا
साथ है तुम्हारे	और हरगिज़ ना	वो कम करेगा तुमसे	आमाल तुम्हारे	बेशक	ज़िंदगी	दुनिया की

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَعِبٌ	وَّلَهْوٌ ؕ	وَاِنْ	تُؤْمِنُوْا	وَتَتَّقُوْا	يُؤْتِكُمْ	اُجُوْرَكُمْ
खेल	और तमाशा है	और अगर	तुम ईमान ले आओ	और तुम तक़्वा करो	वो देगा तुम्हें	अजर तुम्हारे

وَلَا	يَسْـَٔلْكُمْ	اَمْوَالَكُمْ (36)	اِنْ	يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا	فَيُحْفِكُمْ
और ना	वो तलब करेगा तुमसे	माल तुम्हारे	अगर	वो तलब करे तुमसे उन्हें	फिर वो इसरार करे तुमसे

تَبْخَلُوْا	وَيُخْرِجْ	اَضْغَانَكُمْ (37)	هٰۤاَنْتُمْ	هٰۤؤُلَآءِ	تُدْعَوْنَ
तुम बुख़्ल करोगे	और वो ज़ाहिर कर देगा	कीने तुम्हारे	सुनो तुम	वो लोग हो	तुम बुलाए जाते हो

لِتُنْفِقُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ	فَمِنْكُمْ	مَّنْ	يَّبْخَلُ ۚ	وَمَنْ
कि तुम ख़र्च करो	अल्लाह के रास्ते में	तो तुम में से कोई है	जो	बुख़्ल करता है	और जो

يَّبْخَلْ	فَاِنَّمَا	يَبْخَلُ	عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ	وَاللّٰهُ	الْغَنِيُّ
बुख़्ल करता है	तो बेशक वो	वो बुख़्ल करता है	अपने आपसे	और अल्लाह	बहुत ग़नी है

وَاَنْتُمُ	الْفُقَرَآءُ ۚ	وَاِنْ	تَتَوَلَّوْا	يَسْتَبْدِلْ	قَوْمًا
और तुम	मोहताज हो	और अगर	तुम मुंह मोड़ोगे	वो बदल लाएगा	एक क़ौम को

ع 4 10 8	غَيْرَكُمْ ۙ	ثُمَّ	لَا يَكُوْنُوْۤا	اَمْثَالَكُمْ (38) ع
	तुम्हारे सिवा	फिर	ना होंगे वो	तुम जैसे

اٰيَاتُهَا: 29 — 48 سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ 111 — رُكُوْعَاتُهَا: 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا	فَتَحْنَا	لَكَ	فَتْحًا	مُّبِيْنًا (1) ۙ	لِّيَغْفِرَ	لَكَ	اللّٰهُ
बेशक हम	फ़तह अता की हमने	आपको	फ़तह	खुली	ताकि बख़्श दे	आपके लिए	अल्लाह

مَا	تَقَدَّمَ	مِنْ ذَنْۢبِكَ	وَمَا	تَاَخَّرَ	وَيُتِمَّ	نِعْمَتَهٗ	عَلَيْكَ
जो	पहले हुआ	आपके क़ुसूर में से	और जो	बाद में हुआ	और वो पूरा कर दे	अपनी नेअमत को	आप पर

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَيَهْدِيَكَ	صِرَاطًا	مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿2﴾	وَّيَنْصُرَكَ	اللّٰهُ	نَصْرًا
और वो रहनुमाई करे आपकी	(तरफ़) रास्ते	सीधे के	और मदद फ़रमाए आपकी	अल्लाह	मदद

عَزِيْزًا ﴿3﴾	هُوَ	الَّذِيْٓ	اَنْزَلَ	السَّكِيْنَةَ	فِيْ قُلُوْبِ	الْمُؤْمِنِيْنَ
ज़बरदस्त	वो ही है	जिसने	नाज़िल की	सकीनत	दिलों में	मोमिनों के

لِيَزْدَادُوْٓا	اِيْمَانًا	مَّعَ	اِيْمَانِهِمْ ؕ	وَلِلّٰهِ	جُنُوْدُ	السَّمٰوٰتِ
ताकि वो बढ़ जाऐं	ईमान में	साथ	अपने ईमान के	और अल्लाह ही के लिए हैं	लश्कर	आसमानों

وَالْاَرْضِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا ۙ﴿4﴾	لِّيُدْخِلَ	الْمُؤْمِنِيْنَ
और ज़मीन के	और है	अल्लाह	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिक्मत वाला	ताकि वो दाख़िल करे	मोमिन मर्दों

وَالْمُؤْمِنٰتِ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا
और मोमिन औरतों को	बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें

وَيُكَفِّرَ	عَنْهُمْ	سَيِّاٰتِهِمْ ؕ	وَكَانَ	ذٰلِكَ	عِنْدَ اللّٰهِ	فَوْزًا
और वो दूर कर दे	उनसे	बुराईयां उनकी	और है	ये	अल्लाह के नज़दीक	कामयाबी

عَظِيْمًا ۙ﴿5﴾	وَّيُعَذِّبَ	الْمُنٰفِقِيْنَ	وَالْمُنٰفِقٰتِ	وَالْمُشْرِكِيْنَ
बहुत बड़ी	और वो अज़ाब दे	मुनाफ़िक़ मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों को	और मुशरिक मर्दों

وَالْمُشْرِكٰتِ	الظَّآنِّيْنَ	بِاللّٰهِ	ظَنَّ	السَّوْءِ ؕ	عَلَيْهِمْ	دَآئِرَةُ
और मुशरिक औरतों को	जो गुमान करने वाले हैं	अल्लाह के बारे में	गुमान	बुरा	उन्हीं पर है	गर्दिश

السَّوْءِ ۚ	وَغَضِبَ	اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ	وَلَعَنَهُمْ	وَاَعَدَّ	لَهُمْ
बुरी	और ग़ज़बनाक हुआ	अल्लाह	उन पर	और उसने लानत की उन पर	और उसने तैयार कर रखा है	उनके लिए

جَهَنَّمَ ؕ	وَسَآءَتْ	مَصِيْرًا ﴿6﴾	وَلِلّٰهِ	جُنُوْدُ	السَّمٰوٰتِ
जहन्नम को	और वो बहुत ही बुरा	ठिकाना है	और अल्लाह ही के लिए हैं	लश्कर	आसमानों

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْاَرْضِ ؕ	وَ كَانَ	اللّٰهُ	عَزِيْزًا	حَكِيْمًا ⑦	اِنَّاۤ	اَرْسَلْنٰكَ
और ज़मीन के	और है	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला	बेशक हम	भेजा हमने आपको

شَاهِدًا	وَّ مُبَشِّرًا	وَّ نَذِيْرًا ⑧ۙ	لِّتُؤْمِنُوْا	بِاللّٰهِ	وَ رَسُوْلِهٖ
गवाही देने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला	और डराने वाला बनाकर	ताकि तुम ईमान लाओ	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर

وَ تُعَزِّرُوْهُ	وَ تُوَقِّرُوْهُ ؕ	وَ تُسَبِّحُوْهُ	بُكْرَةً	وَّ اَصِيْلًا ⑨	اِنَّ
और तुम क़ुव्वत दो उसे	और तुम ताज़ीम करो उसकी	और तुम तस्बीह बयान करो उस (अल्लाह) की	सुबह	और शाम	बेशक

الَّذِيْنَ	يُبَايِعُوْنَكَ	اِنَّمَا	يُبَايِعُوْنَ	اللّٰهَ ؕ	يَدُ	اللّٰهِ	فَوْقَ
वो लोग जो	बैअत करते हैं आपसे	बेशक	वो बैअत करते हैं	अल्लाह से	हाथ	अल्लाह का	ऊपर है

اَيْدِيْهِمْ ۚ	فَمَنْ	نَّكَثَ	فَاِنَّمَا	يَنْكُثُ	عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ	وَ مَنْ
उनके हाथों के	तो जो कोई	अहद तोड़ दे	तो बेशक	वो अहद तोड़ता है	अपने ही नफ़्स पर	और जो कोई

اَوْفٰى	بِمَا	عٰهَدَ	عَلَيْهُ	اللّٰهَ	فَسَيُؤْتِيْهِ	اَجْرًا	عَظِيْمًا ⑩ ع
पूरा करे	उसे जो	अहद किया था उसने	उस पर	अल्लाह से	तो अनक़रीब वो देगा उसे	अजर	बहुत बड़ा

ع 1 10 9

سَيَقُوْلُ	لَكَ	الْمُخَلَّفُوْنَ	مِنَ الْاَعْرَابِ	شَغَلَتْنَاۤ	اَمْوَالُنَا
अनक़रीब कहेंगे	आपको	पीछे रहने वाले	देहातियों/बदवियों में से	कि मशग़ूल कर लिया हमें	हमारे मालों ने

وَ اَهْلُوْنَا	فَاسْتَغْفِرْ	لَنَا ۚ	يَقُوْلُوْنَ	بِاَلْسِنَتِهِمْ	مَّا	لَيْسَ
और हमारे घर वालों ने	पस बख़्शिश मांगिए	हमारे लिए	वो कहते हैं	अपनी ज़बानों से	जो	नहीं

فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ	قُلْ	فَمَنْ	يَّمْلِكُ	لَكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	شَيْـًٔا	اِنْ
उनके दिलों में	कह दीजिए	पस कौन	मालिक होगा	तुम्हारे लिए	अल्लाह से	किसी चीज़ का	अगर

اَرَادَ	بِكُمْ	ضَرًّا	اَوْ	اَرَادَ	بِكُمْ	نَفْعًا ؕ	بَلْ	كَانَ
उसने इरादा किया	तुम्हारे साथ	किसी नुक़्सान का	या	उसने इरादा किया	तुम्हारे साथ	किसी नफ़ा का	बल्कि	है

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرًا ﴿11﴾	بَلْ	ظَنَنْتُمْ	اَنْ	لَّنْ
अल्लाह	उस से जो	तुम अमल करते हो	पूरा बाख़बर	बल्कि	गुमान किया तुमने	कि	हरगिज़ नहीं

يَّنْقَلِبَ	الرَّسُوْلُ	وَالْمُؤْمِنُوْنَ	اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ	اَبَدًا	وَّزُيِّنَ
पलट कर आऐंगे	रसूल	और मोमिन	तरफ़ अपने घर वालों के	कभी भी	और मुज़य्यन कर दी गई

ذٰلِكَ	فِيْ قُلُوْبِكُمْ	وَظَنَنْتُمْ	ظَنَّ	السَّوْءِ ۖ	وَكُنْتُمْ	قَوْمًا
ये (बात)	तुम्हारे दिलों में	और गुमान किया तुमने	गुमान	बुरा	और हो तुम	लोग

بُوْرًا ﴿12﴾	وَمَنْ	لَّمْ	يُؤْمِنْ	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	فَاِنَّآ	اَعْتَدْنَا
हलाक होने वाला	और जो कोई	ना	वो ईमान लाया	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	तो बेशक हम	तैयार कर रखा है हमने

لِلْكٰفِرِيْنَ	سَعِيْرًا ﴿13﴾	وَلِلّٰهِ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ
काफ़िरों के लिए	भड़कती हुई आग को	और अल्लाह ही के लिए है	बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की

يَغْفِرُ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيُعَذِّبُ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ
वो बख़्श देगा	जिसे	वो चाहेगा	और वो अज़ाब देगा	जिसे	वो चाहेगा	और है	अल्लाह

غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ﴿14﴾	سَيَقُوْلُ	الْمُخَلَّفُوْنَ	اِذَا	انْطَلَقْتُمْ
बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	अनक़रीब कहेंगे	पीछे रहने वाले	जब	चलोगे तुम

اِلٰى مَغَانِمَ	لِتَاْخُذُوْهَا	ذَرُوْنَا	نَتَّبِعْكُمْ ۚ	يُرِيْدُوْنَ	اَنْ
तरफ़ ग़नीमतों के	ताकि तुम ले सको उन्हें	छोड़ दो हमें	हम पीछे चलें तुम्हारे	वो चाहते हैं	कि

يُّبَدِّلُوْا	كَلٰمَ	اللّٰهِ ؕ	قُلْ	لَّنْ	تَتَّبِعُوْنَا	كَذٰلِكُمْ	قَالَ
वो बदल डालें	कलाम	अल्लाह का	कह दीजिए	हरगिज़ नहीं	तुम पीछे आओगे हमारे	इसी तरह	फ़रमाया

اللّٰهُ	مِنْ قَبْلُ ۚ	فَسَيَقُوْلُوْنَ	بَلْ	تَحْسُدُوْنَنَا ؕ	بَلْ	كَانُوْا
अल्लाह ने	इससे पहले	पस ज़रूर वो कहेंगे	बल्कि	तुम हसद करते हो हम से	बल्कि	हैं वो

لَا يَفْقَهُوْنَ	اِلَّا	قَلِيْلًا ⑮	قُلْ	لِّلْمُخَلَّفِيْنَ	مِنَ الْاَعْرَابِ
नहीं वो समझते	मगर	बहुत कम	कह दीजिए	पीछे रहने वालों से	देहातियों/बदवियों में से

سَتُدْعَوْنَ	اِلٰى قَوْمٍ	اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ	تُقَاتِلُوْنَهُمْ	اَوْ
अनक़रीब तुम बुलाए जाओगे	तरफ़ एक क़ौम के	सख़्त जंगजू/लड़ने वाली	तुम जंग करोगे उनसे	या

يُسْلِمُوْنَ ۚ	فَاِنْ	تُطِيْعُوْا	يُؤْتِكُمُ	اللّٰهُ	اَجْرًا	حَسَنًا ۚ	وَاِنْ
वो मुसलमान हो जाऐंगे	फिर अगर	तुम इताअत करोगे	देगा तुम्हें	अल्लाह	अज्र	अच्छा	और अगर

تَتَوَلَّوْا	كَمَا	تَوَلَّيْتُمْ	مِّنْ قَبْلُ	يُعَذِّبْكُمْ	عَذَابًا	اَلِيْمًا ⑯
तुम मुंह मोड़ गए	जैसा कि	तुमने मुंह मोड़ा था	इससे पहले	वो अज़ाब देगा तुम्हें	अज़ाब	दर्दनाक

لَيْسَ	عَلَى الْاَعْمٰى	حَرَجٌ	وَّلَا	عَلَى الْاَعْرَجِ	حَرَجٌ	وَّلَا
नहीं है	अंधे पर	कोई गुनाह	और ना	लंगड़े पर	कोई गुनाह	और ना

عَلَى الْمَرِيْضِ	حَرَجٌ ؕ	وَمَنْ	يُّطِعِ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	يُدْخِلْهُ
मरीज़ पर	कोई गुनाह	और जो कोई	इताअत करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	वो दाख़िल करेगा उसे

جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ۚ	وَمَنْ	يَّتَوَلَّ	يُعَذِّبْهُ
बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	और जो कोई	मुंह फेरेगा	वो अज़ाब देगा उसे

عَذَابًا	اَلِيْمًا ⑰ ع	لَقَدْ	رَضِيَ	اللّٰهُ	عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ	اِذْ
अज़ाब	दर्दनाक	अलबत्ता तहक़ीक़	राज़ी हो गया	अल्लाह	मोमिनों से	जब

ع النصف 2 7 10

يُبَايِعُوْنَكَ	تَحْتَ	الشَّجَرَةِ	فَعَلِمَ	مَا	فِيْ قُلُوْبِهِمْ	فَاَنْزَلَ
वो बैअत कर रहे थे आपसे	नीचे	दरख़्त के	तो उसने जान लिया	जो	उनके दिलों में था	तो उसने उतारी

السَّكِيْنَةَ	عَلَيْهِمْ	وَاَثَابَهُمْ	فَتْحًا	قَرِيْبًا ۙ ⑱	وَّمَغَانِمَ	كَثِيْرَةً
सकीनत/तसकीन	उन पर	और अता की उन्हें	फ़तह	क़रीबी	और ग़नीमतें	बहुत सी

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ	وَ كَانَ	اللّٰهُ	عَزِيْزًا	حَكِيْمًا ﴿19﴾	وَعَدَكُمُ	اللّٰهُ
वो हासिल करेंगे जिन्हें	और है	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त	बहुत हिक्मत वाला	वादा किया तुमसे	अल्लाह ने

مَغَانِمَ	كَثِيْرَةً	تَاْخُذُوْنَهَا	فَعَجَّلَ	لَكُمْ	هٰذِهٖ	وَ كَفَّ
ग़नीमतों का	बहुत सी	तुम हासिल करोगे जिन्हें	तो उसने जल्दी दी	तुम्हें	ये	और उसने रोक दिए

اَيْدِىَ	النَّاسِ	عَنْكُمْ ۚ	وَ لِتَكُوْنَ	اٰيَةً	لِّلْمُؤْمِنِيْنَ	وَ يَهْدِيَكُمْ
हाथ	लोगों के	तुमसे	और ताकि वो हो जाए	एक निशानी	मोमिनों के लिए	और वो हिदायत दे तुम्हें

صِرَاطًا	مُّسْتَقِيْمًا ﴿20﴾	وَّاُخْرٰى	لَمْ	تَقْدِرُوْا	عَلَيْهَا	قَدْ	اَحَاطَ
(तरफ़) रास्ते	सीधे के	और दूसरी (ग़नीमतें)	नहीं	तुम क़ादिर हुए	जिन पर	तहक़ीक़	घेर रखा है

اللّٰهُ	بِهَا ؕ	وَ كَانَ	اللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَىْءٍ	قَدِيْرًا ﴿21﴾	وَ لَوْ
अल्लाह ने	उन्हें	और है	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला	और अगर

قٰتَلَكُمُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوَلَّوُا	الْاَدْبَارَ	ثُمَّ	لَا يَجِدُوْنَ
जंग करते तुमसे	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	अलबत्ता वो फेर लेते	पुश्तें	फिर	ना वो पाते

وَلِيًّا	وَّلَا	نَصِيْرًا ﴿22﴾	سُنَّةَ	اللّٰهِ	الَّتِىْ	قَدْ	خَلَتْ
कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	तरीक़ा	अल्लाह का	वो जो	तहक़ीक़	वो गुज़र चुका

مِنْ قَبْلُ ۛ	وَ لَنْ	تَجِدَ	لِسُنَّةِ	اللّٰهِ	تَبْدِيْلًا ﴿23﴾	وَهُوَ	الَّذِىْ
इससे पहले	और हरगिज़ ना	आप पाऐंगे	तरीक़े को	अल्लाह के	बदलने वाला	और वो ही है	जिसने

كَفَّ	اَيْدِيَهُمْ	عَنْكُمْ	وَ اَيْدِيَكُمْ	عَنْهُمْ	بِبَطْنِ	مَكَّةَ
रोक दिया	उनके हाथों को	तुमसे	और तुम्हारे हाथों को	उनसे	वादी में	मक्का की

مِنْۢ بَعْدِ	اَنْ	اَظْفَرَكُمْ	عَلَيْهِمْ ؕ	وَ كَانَ	اللّٰهُ	بِمَا
इसके बाद	कि	उसने कामयाब किया तुम्हें	उन पर	और है	अल्लाह	उसे जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرًا ﴿24﴾	هُمُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَصَدُّوْكُمْ
तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला	वो ही हैं	जिन्होंने	कुफ़्र किया	और उन्होंने रोका तुम्हें

عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ	وَالْهَدْيَ	مَعْكُوْفًا	اَنْ	يَّبْلُغَ	مَحِلَّهٗ ؕ
मस्जिदे हराम से	और क़ुर्बानी के जानवरों को	जो रोके हुए थे	कि	वो पहुंचें	अपनी हलालगाह को

وَلَوْلَا	رِجَالٌ	مُّؤْمِنُوْنَ	وَنِسَآءٌ	مُّؤْمِنٰتٌ	لَّمْ	تَعْلَمُوْهُمْ
और अगर ना होते	कुछ मर्द	मोमिन	और कुछ औरतें	मोमिन	नहीं	तुम जानते उन्हें

اَنْ	تَطَـُٔوْهُمْ	فَتُصِيْبَكُمْ	مِّنْهُمْ	مَّعَرَّةٌۢ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ۚ
कि	तुम पामाल कर दोगे उन्हें	फिर पहुंचती तुम्हें	उन (की वजह) से	कोई तकलीफ़	बग़ैर	इल्म के

لِيُدْخِلَ	اللّٰهُ	فِيْ رَحْمَتِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ ۚ	لَوْ	تَزَيَّلُوْا
ताकि दाख़िल करे	अल्लाह	अपनी रहमत में	जिसे	वो चाहे	अगर	वो अलग हो गए होते

لَعَذَّبْنَا	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مِنْهُمْ	عَذَابًا	اَلِيْمًا ﴿25﴾	اِذْ
अलबत्ता अज़ाब देते हम	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनमें से	अज़ाब	दर्दनाक	जब

جَعَلَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	فِيْ قُلُوْبِهِمُ	الْحَمِيَّةَ	حَمِيَّةَ	الْجَاهِلِيَّةِ
रख लिया	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	अपने दिलों में	हमीयत (ज़िद) को	(जैसे) हमीयत	जाहिलियत की

فَاَنْزَلَ	اللّٰهُ	سَكِيْنَتَهٗ	عَلٰى رَسُوْلِهٖ	وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	وَاَلْزَمَهُمْ
तो नाज़िल की	अल्लाह ने	सकीनत अपनी	अपने रसूल पर	और मोमिनों पर	और उसने लाज़िम कर दी उन पर

كَلِمَةَ	التَّقْوٰى	وَكَانُوْٓا	اَحَقَّ	بِهَا	وَاَهْلَهَا ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ
बात	तक़वा की	और थे वो	ज़्यादा हक़दार	इसके	और अहल इसके	और है	अल्लाह

بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمًا ﴿26﴾ ع	لَقَدْ	صَدَقَ	اللّٰهُ	رَسُوْلَهُ	الرُّءْيَا
हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला	अलबत्ता तहक़ीक़	सच्ची ख़बर दी	अल्लाह ने	अपने रसूल को	ख़्वाब में

ع 3 9 11

بِالْحَقِّ ۚ	لَتَدْخُلُنَّ	الْمَسْجِدَ	الْحَرَامَ	اِنْ	شَآءَ	اللّٰهُ	اٰمِنِيْنَ ۙ
साथ हक़ के	अलबत्ता तुम ज़रूर दाख़िल होगे	मस्जिदे	हराम में	अगर	चाहा	अल्लाह ने	अमन की हालत में

مُحَلِّقِيْنَ	رُءُوْسَكُمْ	وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ	لَا تَخَافُوْنَ ؕ	فَعَلِمَ	مَا	لَمْ
मुंडवाए हुए	अपने सरों को	और तरशवाए हुए	नहीं तुम्हें ख़ौफ़ होगा	तो उसने जान लिया	जो	नहीं

تَعْلَمُوْا	فَجَعَلَ	مِنْ دُوْنِ	ذٰلِكَ	فَتْحًا	قَرِيْبًا ﴿27﴾	هُوَ	الَّذِيْٓ
तुम जानते थे	तो उसने कर दी	अलावा	इसके	फ़तह	क़रीबी	वो ही है	जिसने

اَرْسَلَ	رَسُوْلَهٗ	بِالْهُدٰى	وَدِيْنِ الْحَقِّ	لِيُظْهِرَهٗ	عَلَى الدِّيْنِ
भेजा	अपने रसूल को	साथ हिदायत	और दीने हक़ के	ताकि वो ग़ालिब कर दे उसे	ऊपर दीन

كُلِّهٖ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ	شَهِيْدًا ﴿28﴾ ؕ	مُحَمَّدٌ	رَّسُوْلُ	اللّٰهِ ؕ
तमाम उसके	और काफ़ी है	अल्लाह	गवाह	मोहम्मद	रसूल हैं	अल्लाह के

وَالَّذِيْنَ	مَعَهٗٓ	اَشِدَّآءُ	عَلَى الْكُفَّارِ	رُحَمَآءُ	بَيْنَهُمْ	تَرٰىهُمْ
और वो जो	साथ हैं उनके	सख़्त हैं	काफ़िरों पर	मेहरबान हैं	आपस में	आप देखेंगे उन्हें

رُكَّعًا	سُجَّدًا	يَّبْتَغُوْنَ	فَضْلًا	مِّنَ اللّٰهِ	وَرِضْوَانًا ۫	سِيْمَاهُمْ
रुकूअ करते हुए	सज्दा करते हुए	वो तलाश करते हैं	फ़ज़्ल	अल्लाह की तरफ़ से	और रज़ामंदी	अलामत उनकी

فِيْ وُجُوْهِهِمْ	مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ	ذٰلِكَ	مَثَلُهُمْ	فِي التَّوْرٰىةِ ۚۖ
उनके चेहरों में है	सज्दों के असर से	ये है	मिसाल उनकी	तौरात में

وَمَثَلُهُمْ	فِي الْاِنْجِيْلِ ۚۛ	كَزَرْعٍ	اَخْرَجَ	شَطْـَٔهٗ	فَاٰزَرَهٗ
और मिसाल उनकी	इंजील में	मानिंद एक खेती के	जिसने निकाली	कोंपल अपनी	फिर उसने मज़बूत किया उसको

فَاسْتَغْلَظَ	فَاسْتَوٰى	عَلٰى سُوْقِهٖ	يُعْجِبُ	الزُّرَّاعَ	لِيَغِيْظَ
फिर वो सख़्त हुई	फिर वो खड़ी हो गई	अपने तने पर	वो ख़ुश करती है	काश्तकारों को	ताकि वो ग़ज़बनाक करे

بِهِمُ	الْكُفَّارَ ؕ	وَعَدَ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا
उनके ज़रिए	काफ़िरों को	वादा किया	अल्लाह ने	उन लोगों से जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए

الصّٰلِحٰتِ	مِنْهُمْ	مَّغْفِرَةً	وَّاَجْرًا	عَظِيْمًا ﴿29﴾ ع
नेक	उनमें से	बख़्शिश का	और अज्र	बहुत बड़े का

ع 4 3 12

اٰيَاتُهَا: 18 — 49 سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ 106 — رُكُوْعَاتُهَا: 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تُقَدِّمُوْا	بَيْنَ يَدَيِ	اللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम क़दम बढ़ाओ	आगे	अल्लाह से	और उसके रसूल से

وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ ﴿1﴾	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
और डरो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

لَا تَرْفَعُوْۤا	اَصْوَاتَكُمْ	فَوْقَ	صَوْتِ	النَّبِيِّ	وَلَا	تَجْهَرُوْا	لَهٗ
ना तुम ऊंचा करो	अपनी आवाज़ों को	ऊपर	आवाज़ के	नबी की	और ना	तुम बुलंद आवाज़ से करो	उनसे

بِالْقَوْلِ	كَجَهْرِ	بَعْضِكُمْ	لِبَعْضٍ	اَنْ	تَحْبَطَ	اَعْمَالُكُمْ
बात	मानिंद बुलंद करने के	तुम्हारे बाज़ के	बाज़ के लिए	कि	(ना) ज़ाया हो जाएं	आमाल तुम्हारे

وَاَنْتُمْ	لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿2﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَغُضُّوْنَ	اَصْوَاتَهُمْ	عِنْدَ
और तुम	ना तुम शऊर रखते हो	बेशक	वो जो	पस्त रखते हैं	अपनी आवाज़ों को	पास

رَسُوْلِ اللّٰهِ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	امْتَحَنَ	اللّٰهُ	قُلُوْبَهُمْ	لِلتَّقْوٰى ؕ
रसूल अल्लाह के	यही वो लोग हैं	जो	आज़मा लिए	अल्लाह ने	दिल उनके	तक़्वा के लिए

لَهُمْ	مَّغْفِرَةٌ	وَّاَجْرٌ	عَظِيْمٌ ﴿3﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يُنَادُوْنَكَ
उनके लिए	बख़्शिश है	और अज्र है	बहुत बड़ा	बेशक	वो लोग जो	आवाज़ देते हैं आपको

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ وَّرَآءِ	الْحُجُرٰتِ	اَكْثَرُهُمْ	لَا يَعْقِلُوْنَ ④	وَلَوْ	اَنَّهُمْ	صَبَرُوْا
बाहर से	हुजरों के	अक्सर उनके	नहीं वो अक़्ल रखते	और अगर	ये कि वो	वो सब्र करते

حَتّٰى	تَخْرُجَ	اِلَيْهِمْ	لَكَانَ	خَيْرًا	لَّهُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
यहां तक कि	आप निकलते	तरफ उनके	अलबत्ता होता	बेहतर	उनके लिए	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला

رَّحِيْمٌ ⑤	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنْ	جَآءَكُمْ	فَاسِقٌ	بِنَبَاٍ
निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	अगर	लाए तुम्हारे पास	कोई फ़ासिक़	किसी ख़बर को

فَتَبَيَّنُوْٓا	اَنْ	تُصِيْبُوْا	قَوْمًا	بِجَهَالَةٍ	فَتُصْبِحُوْا	عَلٰى	مَا
तो तहक़ीक़ कर लिया करो	कि	(ना) तुम तकलीफ़ पहुंचाओ	किसी क़ौम को	जहालत से	फिर तुम हो जाओ	ऊपर	उसके जो

فَعَلْتُمْ	نٰدِمِيْنَ ⑥	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	فِيْكُمْ	رَسُوْلَ	اللّٰهِ ؕ	لَوْ
किया तुमने	नादिम	और जान लो	बेशक	तुम में	रसूल हैं	अल्लाह के	अगर

يُطِيْعُكُمْ	فِيْ كَثِيْرٍ	مِّنَ الْاَمْرِ	لَعَنِتُّمْ	وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	حَبَّبَ
वो कहा मानें तुम्हारा	बहुत से	मामलात में	अलबत्ता मुश्किल में पड़ जाओ तुम	और लेकिन	अल्लाह ने	महबूब बना दिया

اِلَيْكُمُ	الْاِيْمَانَ	وَ زَيَّنَهٗ	فِيْ قُلُوْبِكُمْ	وَ كَرَّهَ	اِلَيْكُمُ
तुम्हारे लिए	ईमान को	और उसने मुज़य्यन कर दिया उसे	तुम्हारे दिलों में	और उसने नापसंदीदा कर दिया	तुम्हारी तरफ़

الْكُفْرَ	وَالْفُسُوْقَ	وَالْعِصْيَانَ ؕ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الرّٰشِدُوْنَ ⑦ ۙ	فَضْلًا
कुफ़्र	और गुनाह	और नाफ़रमानी को	यही लोग हैं	वो	जो हिदायत याफ़्ता हैं	फ़ज़्ल है

مِّنَ اللّٰهِ	وَنِعْمَةً ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ⑧	وَاِنْ	طَآئِفَتٰنِ
अल्लाह की तरफ़ से	और नेअमत	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	ख़ूब हिक्मत वाला है	और अगर	दो गिरोह

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	اقْتَتَلُوْا	فَاَصْلِحُوْا	بَيْنَهُمَا ۚ	فَاِنْۢ	بَغَتْ
मोमिनों में से	वो बाहम लड़ पड़ें	तो सुलह करा दो	दर्मियान उन दोनों के	फिर अगर	ज़्यादती करे

اِحْدٰىهُمَا	عَلَى الْاُخْرٰى	فَقَاتِلُوا	الَّتِيْ	تَبْغِيْ	حَتّٰى	تَفِيْٓءَ
उन दोनों में से एक	दूसरे पर	तो लड़ो	उससे जो	ज़्यादती करे	यहां तक कि	वो पलट आए

اِلٰٓى	اَمْرِ اللّٰهِ ۚ	فَاِنْ	فَآءَتْ	فَاَصْلِحُوْا	بَيْنَهُمَا	بِالْعَدْلِ
तरफ़	अल्लाह के हुक्म के	फिर अगर	वो पलट आए	तो सुलह करा दो	दर्मियान उन दोनों के	साथ अदल के

وَاَقْسِطُوْا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُقْسِطِيْنَ ۝9	اِنَّمَا	الْمُؤْمِنُوْنَ
और इंसाफ़ करो	बेशक	अल्लाह	वो पसंद करता है	इंसाफ़ करने वालों को	बेशक	मोमिन तो

اِخْوَةٌ	فَاَصْلِحُوْا	بَيْنَ	اَخَوَيْكُمْ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ
भाई-भाई हैं	तो सुलह करा दो	दर्मियान	अपने दो भाईयों के	और डरो	अल्लाह से	ताकि तुम

تُرْحَمُوْنَ ۝10 ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا يَسْخَرْ	قَوْمٌ	مِّنْ قَوْمٍ	
तुम रहम किए जाओ	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना मज़ाक़ उड़ाए	कोई क़ौम	किसी क़ौम का	

ع 1 10 13 الثالثة

عَسٰٓى	اَنْ	يَّكُوْنُوْا	خَيْرًا	مِّنْهُمْ	وَلَا	نِسَآءٌ	مِّنْ نِّسَآءٍ	عَسٰٓى
हो सकता है	कि	हों वो	बेहतर	उनसे	और ना	औरतें	औरतों का	हो सकता है

اَنْ	يَّكُنَّ	خَيْرًا	مِّنْهُنَّ ۚ	وَلَا	تَلْمِزُوْٓا	اَنْفُسَكُمْ	وَلَا
कि	हों वो	बेहतर	उनसे	और ना	तुम ऐब लगाओ	अपनों को	और ना

تَنَابَزُوْا	بِالْاَلْقَابِ ؕ	بِئْسَ	الِاسْمُ	الْفُسُوْقُ	بَعْدَ
तुम चिढ़ाओ एक दूसरे को	साथ (बुरे) अलक़ाब के	कितना बुरा है	नाम	फ़िस्क़ में	बाद

الْاِيْمَانِ ۚ	وَمَنْ	لَّمْ	يَتُبْ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الظّٰلِمُوْنَ ۝11
ईमान के	और जो कोई	ना	तौबा करे	तो यही लोग हैं	वो	जो ज़ालिम हैं

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اجْتَنِبُوْا	كَثِيْرًا	مِّنَ الظَّنِّ ۫	اِنَّ	بَعْضَ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	इज्तिनाब करो/बचो	बहुत ज़्यादा	गुमान करने से	बेशक	बाज़

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الظَّنِّ	اِثْمٌ	وَّلَا	تَجَسَّسُوْا	وَلَا	يَغْتَبْ	بَّعْضُكُمْ	بَعْضًا ؕ
गुमान	गुनाह हैं	और ना	तुम तजस्सुस करो	और ना	ग़ीबत करे	बाज़ तुम्हारा	बाज़ की

اَيُحِبُّ	اَحَدُكُمْ	اَنْ	يَّاْكُلَ	لَحْمَ	اَخِيْهِ	مَيْتًا	فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ
क्या पसंद करता है	तुम में से कोई एक	कि	वो खाए	गोश्त	अपने भाई	मुर्दा का	पस तुम नापसंद करते हो उसे

وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	تَوَّابٌ	رَّحِيْمٌ ⑫	يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
और डरो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो

اِنَّا	خَلَقْنٰكُمْ	مِّنْ ذَكَرٍ	وَّاُنْثٰى	وَجَعَلْنٰكُمْ	شُعُوْبًا
बेशक हम	पैदा किया हमने तुम्हें	एक मर्द से	और एक औरत से	और बनाया हमने तुम्हें	क़ौमें

وَّقَبَآئِلَ	لِتَعَارَفُوْا ؕ	اِنَّ	اَكْرَمَكُمْ	عِنْدَ اللّٰهِ
और क़बीले	ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो	बेशक	तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला	अल्लाह के नज़दीक

اَتْقٰىكُمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌ	خَبِيْرٌ ⑬	قَالَتِ	الْاَعْرَابُ
तुम में सबसे ज़्यादा तक़वा वाला है	बेशक	अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	कहा	देहातियों/बदवियों ने

اٰمَنَّا ؕ	قُلْ	لَّمْ	تُؤْمِنُوْا	وَلٰكِنْ	قُوْلُوْٓا	اَسْلَمْنَا
ईमान लाए हम	कह दीजिए	नहीं	तुम ईमान लाए	और लेकिन	कहो	इस्लाम लाए हम

يَدْخُلِ	الْاِيْمَانُ	فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ	وَاِنْ	تُطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ
दाख़िल हुआ	ईमान	तुम्हारे दिलों में	और अगर	तुम इताअत करोगे	अल्लाह की	और उसके रसूल की

لَا يَلِتْكُمْ	مِّنْ اَعْمَالِكُمْ	شَيْـًٔا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ
नहीं वो कमी करेगा तुमसे	तुम्हारे आमाल में से	कुछ भी	बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ ⑭	اِنَّمَا	الْمُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	ثُمَّ
निहायत रहम करने वाला है	बेशक	मोमिन तो	वो लोग हैं जो	ईमान लाए	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	फिर

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَمْ	يَرْتَابُوْا	وَجٰهَدُوْا	بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ
नहीं	वो शक में पड़े	और उन्होंने जिहाद किया	साथ अपने मालों	और अपनी जानों के	अल्लाह के रास्ते में

اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الصّٰدِقُوْنَ ⑮	قُلْ	اَتُعَلِّمُوْنَ	اللّٰهَ	بِدِيْنِكُمْ ؕ	
यही लोग हैं	वो	जो सच्चे हैं	कह दीजिए	क्या तुम बताते हो	अल्लाह को	अपना दीन	

وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَاللّٰهُ	بِكُلِّ
हालाकि अल्लाह	वो जानता है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	और अल्लाह	हर

شَيْءٍ	عَلِيْمٌ ⑯	يَمُنُّوْنَ	عَلَيْكَ	اَنْ	اَسْلَمُوْا ؕ	قُلْ	
चीज़ का	ख़ूब इल्म रखने वाला है	वो एहसान जताते हैं	आप पर	कि	वो इस्लाम ले आए	कह दीजिए	

لَا تَمُنُّوْا	عَلَيَّ	اِسْلَامَكُمْ ۚ	بَلِ	اللّٰهُ	يَمُنُّ	عَلَيْكُمْ	اَنْ
ना तुम एहसान जताओ	मुझ पर	अपने इस्लाम का	बल्कि	अल्लाह	वो एहसान करता है	तुम पर	कि

هَدٰىكُمْ	لِلْاِيْمَانِ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ⑰	اِنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ
उसने हिदायत दी तुम्हें	ईमान के लिए	अगर	हो तुम	सच्चे	बेशक	अल्लाह	वो जानता है

غَيْبَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَاللّٰهُ	بَصِيْرٌۢ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ ⑱ ع	
ग़ैब	आसमानों	और ज़मीन के	और अल्लाह	ख़ूब देखने वाला है	उसे जो	तुम अमल करते हो	

ع 2 8 14

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ 34 — 50

اٰيَاتُهَا: 45 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قٓ ۚ	وَالْقُرْاٰنِ	الْمَجِيْدِ ۚ ①	بَلْ	عَجِبُوْٓا	اَنْ	جَآءَهُمْ	مُّنْذِرٌ
क़ाफ़	क़सम है क़ुरआन की	जो बड़ी शान वाला है	बल्कि	उन्हें ताअज्जुब हुआ	कि	आ गया उनके पास	एक डराने वाला

منزل 7

مِّنْهُمْ	فَقَالَ	الْكٰفِرُوْنَ	هٰذَا	شَيْءٌ	عَجِيْبٌ ۚ ②	ءَاِذَا	مِتْنَا
उन्हीं में से	तो कहा	काफ़िरों ने	ये	एक चीज़ है	अजीब	क्या जब	मर जाऐंगे हम

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ كُنَّا	تُرَابًا ۚ	ذٰلِكَ	رَجْعٌۢ	بَعِيْدٌ ③	قَدْ	عَلِمْنَا	مَا
और हो जाऐंगे हम	मिट्टी	ये	पलटना है	बहुत दूर का	तहक़ीक़	जान लिया हमने	जो
تَنْقُصُ	الْاَرْضُ	مِنْهُمْ ۚ	وَ عِنْدَنَا	كِتٰبٌ	حَفِيْظٌ ④	بَلْ	
कम करती है	ज़मीन	उनमें से	और हमारे पास	एक किताब है	ख़ूब हिफ़ाज़त करने वाली	बल्कि	
كَذَّبُوْا	بِالْحَقِّ	لَمَّا	جَآءَهُمْ	فَهُمْ	فِيْٓ اَمْرٍ	مَّرِيْجٍ ⑤	
उन्होंने झुठलाया	हक़ को	जब	वो आ गया उनके पास	तो वो	एक मामले में हैं	उलझे हुए	
اَفَلَمْ	يَنْظُرُوْٓا	اِلَى السَّمَآءِ	فَوْقَهُمْ	كَيْفَ	بَنَيْنٰهَا	وَ زَيَّنّٰهَا	
क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	तरफ़ आसमान के	अपने ऊपर	किस तरह	बनाया हमने उसे	और मुज़य्यन किया हमने उसे	
وَ مَا	لَهَا	مِنْ فُرُوْجٍ ⑥	وَ الْاَرْضَ	مَدَدْنٰهَا	وَ اَلْقَيْنَا	فِيْهَا	
और नहीं है	उसमें	कोई शगाफ़	और ज़मीन	फैलाया हमने उसे	और डाले हमने	उसमें	
رَوَاسِيَ	وَ اَنْۢبَتْنَا	فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	زَوْجٍۢ	بَهِيْجٍ ۙ⑦	تَبْصِرَةً	
पहाड़	और उगाए हमने	उसमें	हर क़िस्म के	जोड़े	बारौनक़	बतौर बसीरत	
وَّ ذِكْرٰى	لِكُلِّ عَبْدٍ	مُّنِيْبٍ ⑧	وَ نَزَّلْنَا	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً		
और नसीहत	वास्ते हर बंदे	रुजूअ करने वाले के	और उतारा हमने	आसमान से	पानी		
مُّبٰرَكًا	فَاَنْۢبَتْنَا	بِهٖ	جَنّٰتٍ	وَّ حَبَّ	الْحَصِيْدِ ۙ⑨	وَ النَّخْلَ	
बरकत वाला	फिर उगाए हमने	साथ उसके	बाग़ात	और अनाज	कटी हुई खेती के	और ख़जूर के दरख़्त	
بٰسِقٰتٍ	لَّهَا	طَلْعٌ	نَّضِيْدٌ ۙ⑩	رِّزْقًا	لِّلْعِبَادِ ۙ	وَ اَحْيَيْنَا	
बुलंद व बाला	उनके लिए	ख़ोशे हैं	तह ब तह/ऊपर नीचे	रिज़्क़ है	बंदों के लिए	और ज़िंदा किया हमने	
بِهٖ	بَلْدَةً	مَّيْتًا ؕ	كَذٰلِكَ	الْخُرُوْجُ ⑪	كَذَّبَتْ	قَبْلَهُمْ	
साथ उसके	शहर	मुर्दा को	इसी तरह होगा	निकलना	झुठलाया	उनसे क़ब्ल	

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَوْمُ	نُوْحٍ	وَّ اَصْحٰبُ الرَّسِّ	وَ ثَمُوْدُ ﴿12﴾	وَ عَادٌ	وَّ فِرْعَوْنُ
क़ौमे	नूह	और असहाबे-रस (कुएं वालों)	और समूद ने	और आद	और फ़िरऔन

وَ اِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿13﴾	وَّ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ	وَ قَوْمُ تُبَّعٍ ؕ	كُلٌّ	كَذَّبَ
और लूत के भाईयों ने	और असहाबे ऐका (जंगल वालों)	और क़ौमे तुब्बअ ने	सब ने	झुठलाया

الرُّسُلَ	فَحَقَّ	وَعِيْدِ ﴿14﴾	اَفَعَيِيْنَا	بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ	بَلْ
रसूलों को	तो साबित हो गई	वईद मेरी	क्या भला थक गए हम	पहली तख़लीक़ से	बल्कि

هُمْ	فِيْ لَبْسٍ	مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿15﴾ ع	وَ لَقَدْ	خَلَقْنَا	الْاِنْسَانَ
वो	शक में हैं	नई पैदाइश से	और अलबत्ता तहक़ीक़	पैदा किया हमने	इंसान को

ع 1 15 15

وَ نَعْلَمُ	مَا	تُوَسْوِسُ	بِهٖ	نَفْسُهٗ ۚ	وَ نَحْنُ	اَقْرَبُ	اِلَيْهِ
और हम जानते हैं	जो	वसवसा डालता है	उसे	नफ़्स उसका	और हम	ज़्यादा क़रीब हैं	उसके

مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿16﴾	اِذْ	يَتَلَقَّى	الْمُتَلَقِّيٰنِ	عَنِ الْيَمِيْنِ
शह रग से	जब	ले लेते हैं	दो लेने वाले	दाऐं तरफ़ से

وَ عَنِ الشِّمَالِ	قَعِيْدٌ ﴿17﴾	مَا	يَلْفِظُ	مِنْ قَوْلٍ	اِلَّا	لَدَيْهِ
और बाऐं तरफ़ से	बैठे हुए	नहीं	वो बोलता	कोई बात	मगर	उसके पास है

رَقِيْبٌ	عَتِيْدٌ ﴿18﴾	وَ جَآءَتْ	سَكْرَةُ	الْمَوْتِ	بِالْحَقِّ ؕ	ذٰلِكَ
एक मुहाफ़िज़/ निगरान	तैयार	और आ गई	बेहोशी	मौत की	साथ हक़ के	यही है

مَا	كُنْتَ	مِنْهُ	تَحِيْدُ ﴿19﴾	وَ نُفِخَ	فِي الصُّوْرِ ؕ	ذٰلِكَ
वो जो	था तू	उससे	तू भागता	और फूंका जाएगा	सूर में	ये

الْوَعِيْدِ ﴿20﴾	وَ جَآءَتْ	كُلُّ	نَفْسٍ	مَّعَهَا	سَآئِقٌ	وَّ شَهِيْدٌ ﴿21﴾
वादे का	और आएगा	हर	नफ़्स	उसके साथ (होगा)	एक हांकने वाला	और एक गवाही देने वाला

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَقَدْ	كُنْتَ	فِيْ غَفْلَةٍ	مِّنْ هٰذَا	فَكَشَفْنَا	عَنْكَ	غِطَآءَكَ
अलबत्ता तहक़ीक़	था तू	ग़फ़लत में	उससे	तो हटा दिया हमने	तुझसे	पर्दा तेरा

فَبَصَرُكَ	الْيَوْمَ	حَدِيْدٌ ﴿22﴾	وَقَالَ	قَرِيْنُهٗ	هٰذَا	مَا	لَدَيَّ
तो निगाह तेरी	आज	बहुत तेज़ है	और कहेगा	साथी (फ़रिश्ता) उसका	ये है	जो	मेरे पास है

عَتِيْدٌ ﴿23﴾	اَلْقِيَا	فِيْ جَهَنَّمَ	كُلَّ	كَفَّارٍ	عَنِيْدٍ ﴿24﴾		مَّنَّاعٍ
तैयार	तुम दोनों डाल दो	जहन्नम में	हर	बहुत नाशुक्रे	अनाद रखने वालो को		बहुत रोकने वाले को

لِّلْخَيْرِ	مُعْتَدٍ	مُّرِيْبِ ﴿25﴾	الَّذِيْ	جَعَلَ	مَعَ	اللّٰهِ	اِلٰهًا
ख़ैर से	हद से निकलने वाले	शक में पड़े हुए को	जिसने	बना लिया	साथ	अल्लाह के	एक इलाह

اٰخَرَ	فَاَلْقِيٰهُ	فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿26﴾	قَالَ	قَرِيْنُهٗ	رَبَّنَا
दूसरा	पस तुम दोनों डाल दो उसे	शदीद अज़ाब में	कहेगा	साथी (शैतान) उसका	ऐ हमारे रब

مَآ	اَطْغَيْتُهٗ	وَلٰكِنْ	كَانَ	فِيْ ضَلٰلٍ	بَعِيْدٍ ﴿27﴾	قَالَ
नहीं	सरकश बनाया मैंने उसे	और लेकिन	था वो	गुमराही में	बहुत दूर की	वो फ़रमाएगा

لَا تَخْتَصِمُوْا	لَدَيَّ	وَقَدْ	قَدَّمْتُ	اِلَيْكُمْ	بِالْوَعِيْدِ ﴿28﴾	مَا
ना तुम झगड़ा करो	मेरे पास	हालांकि तहक़ीक़	पहले भेज दी मैंने	तरफ़ तुम्हारे	वईद	नहीं

ع 2 14 16

يُبَدَّلُ	الْقَوْلُ	لَدَيَّ	وَمَآ	اَنَا	بِظَلَّامٍ	لِّلْعَبِيْدِ ﴿29﴾ ع	يَوْمَ
बदली जाती	बात	मेरे पास	और नहीं हूं	मैं	कोई ज़ुल्म करने वाला	बंदों पर	जिस दिन

نَقُوْلُ	لِجَهَنَّمَ	هَلِ	امْتَلَاْتِ	وَتَقُوْلُ	هَلْ	مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿30﴾
हम कहेंगे	जहन्नम से	क्या	भर गई तू	और वो कहेगी	क्या है	कुछ मज़ीद

وَاُزْلِفَتِ	الْجَنَّةُ	لِلْمُتَّقِيْنَ	غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿31﴾	هٰذَا	مَا	تُوْعَدُوْنَ
और क़रीब लाई जाएगी	जन्नत	मुत्तक़ी लोगों के लिए	कुछ दूर ना होगी	ये है	वो जो	तुम वादा किए जाते थे

بِالْغَيْبِ	الرَّحْمٰنَ	خَشِيَ	مَنْ	حَفِيْظٍ ﴿32﴾ ج	اَوَّابٍ	لِكُلِّ
ग़ायबाना/बिन देखे	रहमान से	डरा	जो	बहुत हिफ़ाज़त करने वाले के	बहुत रुजूअ करने वाले	वास्ते हर

يَوْمُ	ذٰلِكَ	بِسَلٰمٍ ط	اُدْخُلُوْهَا	مُّنِيْبِۨ ﴿33﴾ لا	بِقَلْبٍ	وَجَآءَ
दिन है	ये	साथ सलामती के	दाखिल हो जाओ इसमें	रुजूअ करने वाला	दिल	और वो लाया

مَزِيْدٌ ﴿35﴾	وَلَدَيْنَا	فِيْهَا	يَشَآءُوْنَ	مَّا	لَهُمْ	الْخُلُوْدِ ﴿34﴾
मज़ीद है	और हमारे पास	उसमें	वो चाहेंगे	जो	उनके लिए होगा	हमेशगी का

بَطْشًا	مِنْهُمْ	اَشَدُّ	هُمْ	مِّنْ قَرْنٍ	قَبْلَهُمْ	اَهْلَكْنَا	وَكَمْ
पकड़ में	इनसे	ज़्यादा शदीद थीं	वो	उम्मतें	इनसे पहले	हलाक कीं हमने	और कितनी ही

فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿36﴾	هَلْ	فِي الْبِلَادِ ط	فَنَقَّبُوْا
इसमें	यक़ीनन	कोई जाए पनाह	क्या है	मुल्कों को	तो उन्होंने छान मारा था

السَّمْعَ	اَلْقَى	اَوْ	قَلْبٌ	لَهٗ	كَانَ	لِمَنْ	لَذِكْرٰى
कान	वो लगाए	या	दिल	उसके लिए	हो	वास्ते उसके जो	अलबत्ता नसीहत है

وَمَا	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقْنَا	وَلَقَدْ	شَهِيْدٌ ﴿37﴾	وَهُوَ
और जो	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	हाज़िर हो	जबकि वो

فَاصْبِرْ	مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿38﴾	مَسَّنَا	وَّمَا	فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ق	بَيْنَهُمَا
पस सब्र कीजिए	किसी थकावट ने	छुआ हमें	और नहीं	छः दिनों में	दर्मियान है इन दोनों के

طُلُوْعِ	قَبْلَ	رَبِّكَ	بِحَمْدِ	وَسَبِّحْ	يَقُوْلُوْنَ	مَا	عَلٰى
तुलूअ होने से	पहले	अपने रब की	साथ हम्द के	और तस्बीह कीजिए	वो कहते हैं	उसके जो	ऊपर

وَاَدْبَارَ	فَسَبِّحْهُ	وَمِنَ الَّيْلِ	الْغُرُوْبِ ﴿39﴾ ج	وَقَبْلَ	الشَّمْسِ
और बाद	पस तस्बीह कीजिए उसकी	और रात में से	गुरूब होने से	और पहले	सूरज के

© AL HUDA INT NATIONL WELF RE FOUNDATION

السُّجُوْدِ (40)	وَاسْتَمِعْ	يَوْمَ	يُنَادِ	الْمُنَادِ	مِنْ مَّكَانٍ	قَرِيْبٍ (41) ۙ
सज्दों के	और ग़ौर से सुनिए	जिस दिन	पुकारेगा	पुकारने वाला	एक जगह से	क़रीब की

يَّوْمَ	يَسْمَعُوْنَ	الصَّيْحَةَ	بِالْحَقِّ ؕ	ذٰلِكَ	يَوْمُ	الْخُرُوْجِ (42)	اِنَّا
जिस दिन	वो सुनेंगे	चिंघाड़ को	साथ हक़ के	ये होगा	दिन	निकलने का	बेशक हम

نَحْنُ	نُحْيٖ	وَنُمِيْتُ	وَاِلَيْنَا	الْمَصِيْرُ (43) ۙ	يَوْمَ	تَشَقَّقُ
हम ही	हम ज़िंदा करते हैं	और हम मौत देते हैं	और तरफ़ हमारे ही	लौटना है	जिस दिन	शक़ हो जाएगी

الْاَرْضُ	عَنْهُمْ	سِرَاعًا ؕ	ذٰلِكَ	حَشْرٌ	عَلَيْنَا	يَسِيْرٌ (44)
ज़मीन	उनसे	तेज़ दौड़ने वाले होंगे	ये है	हशर/इकट्ठा करना	हम पर	बहुत आसान

نَحْنُ	اَعْلَمُ	بِمَا	يَقُوْلُوْنَ	وَمَآ	اَنْتَ	عَلَيْهِمْ
हम	ज़्यादा जानते हैं	उसे जो	वो कहते हैं	और नहीं	आप	उन पर

بِجَبَّارٍ قف	فَذَكِّرْ	بِالْقُرْاٰنِ	مَنْ	يَّخَافُ	وَعِيْدِ (45) ع
ज़बरदस्ती करने वाले	पस नसीहत कीजिए	साथ क़ुरआन के	उसे जो	डरता हो	मेरी वईद से

ع 3 16 17

اٰيَاتُهَا: 60 — 51 سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ 67 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالذّٰرِيٰتِ	ذَرْوًا (1) ۙ	فَالْحٰمِلٰتِ	وِقْرًا (2) ۙ	فَالْجٰرِيٰتِ
क़सम है उन हवाओं की जो बिखेरने वाली हैं	उड़ा कर	फिर उठाने वालियां हैं	बोझ को	फिर चलने वालियां हैं

يُسْرًا (3) ۙ	فَالْمُقَسِّمٰتِ	اَمْرًا (4) ۙ	اِنَّمَا	تُوْعَدُوْنَ	لَصَادِقٌ (5) ۙ
आसानी से	फिर तक़्सीम करने वालियां हैं	काम को	बेशक जो	तुम वादा किए जाते हो	अलबत्ता सच्चा है

وَّاِنَّ	الدِّيْنَ	لَوَاقِعٌ (6) ؕ	وَالسَّمَآءِ	ذَاتِ الْحُبُكِ (7) ۙ	اِنَّكُمْ
और बेशक	बदला (का दिन)	अलबत्ता वाक़ेअ होने वाला है	क़सम है आसमान की	रास्तों वाले	बेशक तुम

لَفِيْ قَوْلٍ	مُّخْتَلِفٍ ﴿8﴾	يُّؤْفَكُ	عَنْهُ	مَنْ	اُفِكَ ﴿9﴾	قُتِلَ
अलबत्ता एक बात में हो	मुख़्तलिफ़	फेरा जाता है	उससे	जो	फेरा गया	मारे गए

الْخَرّٰصُوْنَ ﴿10﴾	الَّذِيْنَ	هُمْ	فِيْ غَمْرَةٍ	سَاهُوْنَ ﴿11﴾	يَسْـَٔلُوْنَ
अंदाज़े लगाने वाले	वो लोग जो	वो	ग़फ़लत में	भूले हुए हैं	वो सवाल करते हैं

اَيَّانَ	يَوْمُ	الدِّيْنِ ﴿12﴾	يَوْمَ	هُمْ	عَلَى النَّارِ	يُفْتَنُوْنَ ﴿13﴾
कब होगा	दिन	बदले का	उस रोज़	वो	आग पर	वो तपाए जाऐंगे

ذُوْقُوْا	فِتْنَتَكُمْ	هٰذَا	الَّذِيْ	كُنْتُمْ	بِهٖ	تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿14﴾
चखो	अज़ाब अपना	ये है	वो जो	थे तुम	जिसे	तुम जल्दी तलब करते

اِنَّ	الْمُتَّقِيْنَ	فِيْ جَنّٰتٍ	وَّعُيُوْنٍ ﴿15﴾	اٰخِذِيْنَ	مَآ	اٰتٰىهُمْ
बेशक	मुत्तक़ी लोग	बाग़ात में	और चश्मों में होंगे	लेने वाले होंगे	जो	देगा उन्हें

رَبُّهُمْ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	قَبْلَ	ذٰلِكَ	مُحْسِنِيْنَ ﴿16﴾	كَانُوْا	قَلِيْلًا
रब उनका	बेशक वो	थे वो	क़ब्ल	इसके	नेकोकार	थे वो	कम ही

مِّنَ الَّيْلِ	مَا	يَهْجَعُوْنَ ﴿17﴾	وَبِالْاَسْحَارِ	هُمْ	يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿18﴾
रात को	जो	वो सोते थे	और सहरी के वक़्त	वो	वो इस्तग़फ़ार करते थे

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ	حَقٌّ	لِّلسَّآئِلِ	وَالْمَحْرُوْمِ ﴿19﴾	وَفِي الْاَرْضِ	اٰيٰتٌ
और उनके मालों में	हक़ था	वास्ते सवाली	और महरूम के	और ज़मीन में	निशानियां हैं

لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿20﴾	وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ	اَفَلَا	تُبْصِرُوْنَ ﴿21﴾	وَفِي السَّمَآءِ
यक़ीन करने वालों के लिए	और तुम्हारे नफ़्सों में भी	क्या भला नहीं	तुम देखते	और आसमान में

رِزْقُكُمْ	وَمَا	تُوْعَدُوْنَ ﴿22﴾	فَوَرَبِّ	السَّمَآءِ	وَالْاَرْضِ	اِنَّهٗ
रिज़्क़ है तुम्हारा	और जो	तुम वादा किए जाते हो	पस क़सम है रब की	आसमान	और ज़मीन के	बेशक वो

ع 1 23 18

لَحَقٌّ	مِّثْلَ	مَآ	اَنَّكُمْ	تَنْطِقُوْنَ ﴿23﴾ ع	هَلْ	اَتٰىكَ	حَدِيْثُ
अलबत्ता हक़ है	मानिंद	उसके जो	बेशक तुम	तुम बोलते हो	क्या	आई आपके पास	ख़बर

وقف لازم

ضَيْفِ	اِبْرٰهِيْمَ	الْمُكْرَمِيْنَ ﴿24﴾	اِذْ	دَخَلُوْا	عَلَيْهِ	فَقَالُوْا	
मेहमानों की	इब्राहीम के	जो मोअज़्ज़िज़ थे	जब	वो दाख़िल हुए	उस पर	तो उन्होंने कहा	

سَلٰمًا ؕ	قَالَ	سَلٰمٌ ۚ	قَوْمٌ	مُّنْكَرُوْنَ ﴿25﴾ ۚ	فَرَاغَ	اِلٰٓى اَهْلِهٖ
सलाम हो	उसने कहा	सलाम हो	लोग हो	अजनबी	फिर वो गया	तरफ़ अपने घर वालों के

فَجَآءَ	بِعِجْلٍ	سَمِيْنٍ ﴿26﴾ ۙ	فَقَرَّبَهٗٓ	اِلَيْهِمْ	قَالَ	اَلَا
पस वो ले आया	एक बछड़ा (भुना हुआ)	मोटा-ताज़ा	फिर उसने क़रीब किया उसे	तरफ़ उनके	उसने कहा	क्या नहीं

تَاْكُلُوْنَ ﴿27﴾ ۙ	فَاَوْجَسَ	مِنْهُمْ	خِيْفَةً ؕ	قَالُوْا	لَا تَخَفْ ؕ
तुम खाते	तो उसने महसूस किया	उनसे	ख़ौफ़	उन्होंने कहा	ना तुम डरो

وَبَشَّرُوْهُ	بِغُلٰمٍ	عَلِيْمٍ ﴿28﴾	فَاَقْبَلَتِ	امْرَاَتُهٗ	فِيْ صَرَّةٍ
और उन्होंने ख़ुशख़बरी दी उसे	एक लड़के	बहुत इल्म वाले की	तो आगे बढ़ी	बीवी उसकी	एक चीख़ के साथ

فَصَكَّتْ	وَجْهَهَا	وَقَالَتْ	عَجُوْزٌ	عَقِيْمٌ ﴿29﴾	قَالُوْا	كَذٰلِكِ ۙ
तो उसने हाथ मारा	अपने चेहरे पर	और वो कहने लगी	बुढ़िया	बांझ	उन्होंने कहा	इसी तरह होगा

قَالَ	رَبُّكِ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	الْحَكِيْمُ	الْعَلِيْمُ ﴿30﴾
फ़रमाया है	तेरे रब ने	बेशक वो	वो ही है	ख़ूब हिक्मत वाला	बहुत इल्म वाला

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION